● प्रकाशक

शिल्पा प्रकाशन
४४ सराय कायस्थान
कोटा-३२४००६

● मुद्रक

प्रेमचन्द जैन
ज्योति प्रिंटिंग प्रेस,
रामपुरा बाजार
कोटा-३२४००६

● मूल्य

६-०० रु०

बसन्त पचमी, १९७५

अस्तित्व का प्रवाह

—सोहनराज कोठारी

Astitva KA Pravah

by
Sohan Raj Kothari

अपनी बात

अध्ययन, मनन, चिंतन के निष्कर्षों ने
जब पा लिया मेरी चेतना मे स्थान
तो मन की चंचलता मे शब्दो की लहरो ने
तरंगित होकर छोड दी मधुर तान
भावो के निष्कप होने की प्रक्रिया मे
मुखरित हो उठा अस्तित्व का प्रवाह
और स्वभाव मे स्थित होने लगा
कि चेतना के तल पर मिल गया आनद अथाह

यह सब कुछ हुआ अनजान
पर मैंने इसे अब अपना लिया मान

वसन्त पंचमी
१६-२-७५

सोहनराज कोठारी

अपनी अनुभूतियां : शब्दों के घेरे में

राजस्थान उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधिपति माननीय श्री भगवतीप्रसाद बेरी का मुझ पर गहन सात्विक स्नेह और कोटा संभाग के प्रति उनका आकर्षण रहा है, और इन दोनो स्थितियो मे उन्होने मेरी जन्मभूमि से दूरस्थ स्थान होने के कारण मेरी इच्छा न होते हुए भी मेरा स्थानान्तरण कोटा कर दिया। सयोग की बात थी कि कोटा में आने के एक वर्ष के भीतर भीतर मेरे युवा भतीज का लंबी बीमारी के बाद देहात हो गया व उसके अवसाद से मेरे अग्रज व पथ प्रदर्शक बडे भाई साहब का भी निधन हो गया। इन दोनो घटनाओ का मुझ पर आघात होना स्वाभाविक था, पर इसके उपरात भी मैंने अपनी आँनरिक स्थिति को विचलित नही होने दिया। कोटा मे मेरा निवास स्थान एक बहुत ही भव्य व रमणीक सरकारी बगले में है। जिसमे चारो ओर नानाविध वृक्ष एव लतिकाओ से परिपूर्ण नैसर्गिक सौन्दर्य अपने अपूर्व साज सज्जा व श्रंगार से उभरता हुआ प्रतीत होता है। इस संभाग के विभिन्न न्यायलयो के निरीक्षण के समय कोटा, बूंदी, झालावाड तीनो जिलो का मैंने पर्याप्त भ्रमण किया और मुझे इस संभाग की प्राक्रतिक संपदा, अनुपम सांस्कृतिक धरोहर और सम्मोहक प्रेरणाओ ने बहुत प्रभावित किया। इस सारे ताजगी भरे सुरम्य, सुगन्धित एवं आन्नदपूर्ण वातावरण के मध्य मेरी पारवारिक शोकाकुल स्थिति ने मुझे जीवन की व्याख्या खोजने को विवश किया और उसका सहज परिणाम यह हुआ कि मैंने अपने वर्षो के अध्ययन, मनन, चितन के निष्कर्षों को क्षणिकाओ के माध्यम से अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया और उसी के कारण अल्प से समय मे लगभग चार सौ क्षणिकाओ की रचना हो गई।

जीवन को सुन्दर बनाने के लिए मैं प्रारम्भ से साहित्य व कला मे अभिरूचि रखता था व उसे शब्दो के योग के माध्यम से कभी कभी प्रकट करने का भी प्रयास करता था। इस वर्ष भगवान् महावीर २५०० वें निर्वाण महोत्सव का पावन अवसर होने के कारण मैंने उस महामनीस्वी को भी अपनी अनुभूतियो मे देखने का प्रयास किया

और उसे शब्दो मे बांधना चाहा। यदा कदा साहित्यिक समागम के समय यहाँ के प्रख्यात कवि और संवेदनशील गीतकार कुमार शिव, शब्द चयन के अतुल धनी भाई श्री प्रेमजी प्रेम व कला मर्मज्ञ श्री राम कुमार जी (जन सम्पर्क अधिकारी) आदि कई साहित्यिक मित्रो ने मेरी रचनाओ को सराहा व इनको प्रकाशित कराने के लिए अनुमति चाही। एक न्यायिक अधिकारी व साधारण साहित्य सेवी के लिए यह सहज संकोच की बात थी, पर मित्रो का आग्रह मैं टाल नही सका और उसी के कारण चामल प्रकाशन द्वारा शब्दो की लहरें व शिल्पा प्रकाशन द्वारा, महावीर मेरी अनुभूतियो मे, व अस्तित्व का प्रवाह का प्रकाशन हो पाया। स्थानीय जिलाधीश अनिलकुमार जी एवं अनन्य मित्रो व अधिकारीगणो ने मेरे प्रकाशनो को सराहा व मुझे उत्साहित किया।

मैं अपने सभी मित्रो व हितेषियों का आभारी हूँ, जिन्होने मुझे अपने लघु शब्द चयनो को प्रकाशन कराने के लिये प्रेरणा प्रदान की व मेरे यश और आनन्द की कामना की। वस्तुतः यह कोटा संभाग की विशेषता ही है कि मैंने सारे विषादो के उपरांत भी यहा अत्यधिक आह्लाद व आनन्द पाया।

वस्तुतः मैं अपनी सारी अनुभूतियो को शब्दो की लहरो मे तैराता हुआ अस्तित्व के प्रवाह में एकाकार करना चाहता हूँ और मेरी कामना है कि चेतना के तल पर ये लहरें किसी दिन तिरोहित हो जाए और यह प्रवाह भी अनंत मे विस्तीर्ण बन जाय ताकि मेरे जीवन को पूर्णता एवं समग्रता की उपलब्धि हो सके।

—सोहनराज कोठारी

卐 शब्दो की लहरो, से जब मैं हो गया पार
मिल गया, निशब्द, शीत, शून्य का संसार
पा लिया, मैंने तभी अस्तित्व का प्रवाह
छा गया उल्लास, भर गया उत्साह ★

卐 अपने विचारो को शब्दो मे बाधकर
कर दिया आकार युक्त
पर काल के बंधन से, शब्द रह सके कब मुक्त
काल के आवरण को पार सकते है,
वे ही शाश्वतस्वर
जिनमें चेतना की अनुभूति, गूंजती प्रखर ★

卐 जिस किसी को हमने दे दिया नाम
वह वस्तु बन गया, हो गया उसका सीमित काम
शब्द है ठोस, जिसके कुछ न आर पार
सारी संभावनाएँ सिमट कर हो जाती बेकार
पर अस्तित्व तो है तरल, जिसका सतत प्रवाह
अनेक अवस्थाएँ, समाहित होकर भी पाती न थाह
जीवन या अस्तित्व को शब्द देकर कहा
कि रुक गई गति
अनुभूति न बन कर, केवल हो गई स्थिति ★

卐 अस्तित्व के प्रवाह मे, प्रेम बढ़ता रहे
उसमे, नित्य नया वेग चढता रहे
तभी आयेगा, उसमें आनन्द नूतन
पर यदि प्रेम स्थिर होकर बन गया स्वभाव
तो वही बन जायगा दुखद बन्धन ★

卐 आनन्द से भरा हो जीवन
या वेदना से भरा हो मन
या आश्चर्य से डूबा हो धरती का कण कण
इन सब को शब्दों में समाहित किया
कि हो गया साहित्य सृजन ★

卐
जागृत होकर करते बहाव
जब शब्दो के संगीत का हो ज्ञान
कला हीन होने की कला लें जान
और जन जन की भावनाओं को दे सकें सम्मान ★

卐 कविता एक दर्शनहै, जो हृदय को लेती मोह
और दर्शन वह कविता है, जो गाता रहता मन
दोनो का हो जाय मधुर मिलन
ता एक ही समय मे हृदय मे भर जाये अनुराग
और मन छेड दे कोई प्रियकारी राग
और प्रियतम की छाया में
हमारे जीवन का कण-कण मुखरित हो उठे जाग ★

卐 कविता न तो कोई मत है न कोई विचार
पर है केवल बहता हुआ भाव
जिसका उद्गम रक्त भरा घाव
या फिर मुस्कराते मुख मण्डल का
स्नेहिल सहज सरल स्वभाव ★

卐 मैंने एक कवि से कहा
तुम्हारा मूल्य मृत्यु के बाद भी कोई सकेगा न जान
तो उसने कहा मृत्यु ही होगी उसके
यथार्थता की मौन पहचान
और जीवन मे उसे जान न सके, क्योकि
जीभ से अधिक शब्द उसके हृदय मे थे
और हाथो से अधिक सशक्त थे, उसके अरमान ★

卐 एक कवि और विद्वान
दोनो से सामने हरा भरा खुला सुरम्य मैदान
विद्वान इसे पार करले तो बन जाय बुद्धिमान
और कवि पार कर ले, तो पा जाय सिद्धि स्थान ★

卐 जीवन को, उसके हृदय के संगीत को
गुजित करने वाले, गायक को मिलान स्वर
तब उसके मन की बात कहने को
दार्शनिक ने जन्म से लिया आकार ★

卐 ज्ञानी ने जगत के रहस्य को जाना
तो उसके जीवन के कण कण से फूटा संगीत
लय, ताल, स्वर एक रस हो गूंज उठे
और वह कवि बन गया, गाये उसने प्रीत के गीत
कवि ने जीवन की अनुभूतियों की खोज मे
विषय बासनाओ, के देखे उभरते दर्द भरे घाव
स्वाधीनता की तडफ मे देखा छटपटाता चेतना का स्वभाव
उसके हृदय की धडकन मे गूँज उठे अविरल सचेतन प्राण
और उसने ज्ञानी बन, लिया स्वयं को जान ★

卐 संसार का हर प्राणी एक सा ही गायक है
और हृदय की एक सी वेदना में
फडफडाते हैं सबके अधर
पर किसी के साज, ताल, सुर ठीक है
और किसी का ताल बेताल
और बेसुरा है स्वर ★

卐 एक भूला सत्य मर गया
हजारो वास्तविकताएँ वसीयत मे छोड कर गया
जो उसकी अर्थी व समाधि में आगई काम
और प्रकट करने लगी अलिखत कथा तमाम ★

卐 धुन्धली कल्पनाएँ, भूले बिसरे चित्र
को मूर्तिमान किया और कहा उसे कला
प्रकृति और परमेश्वर के बीच बनाया सेतु भला
पर अनन्त मे पहुँचा
तो अलिखित कविताओ व
अचित्रित चित्रो का समूह ही मिला ★

卐 धरती, आकाश के पन्नो पर
वृक्षो की लेखनी से, लिखती है-लेख
पर जब हम वृक्ष काट कर
उसका कागज बना लेते है
तो उस पर लिखे अपने खोखले
विचारो को ही पाते हैं-देख ★

卐 स्वप्न अपनी ही काल्पनिक रचना
जिसका सृष्टा और दृष्टा है
स्वयं का अचेतन मन
और इसीलिये हम उसको
कहते है—स्व-पन ★

卐 हमारे जो दिख रहे हैं
धर्म, नीति, आचरण भरे व्यवहार
वे कभी नही छू सकते हैं जीवन
क्योकि वे केवल हैं अपने ही फैलाए हुए स्वप्न ★

卐 धरती की गहराई में बीज डाले
तो लहराते फूलो का मिल गया वरदान
और अपने सपनो को आकाश में बिखेरा
तो रुपहली प्रेयसी का फल गया अरमान ★

卐 किसने कहा, स्वप्न देख कर भाग जाना
श्रेयस्कर तो है कि स्वप्न देखकर जाग जाना
भागने की कोशिश की तो
स्वप्न चारो ओर छायेगा
और जागने की कोशिश की तो
स्वप्न कभी न आयेगा ★

卐 हर वस्तु अपने आप में है सुन्दर
और वही आख उसे देख सकती है
जो गहराई से झाँक सकती अन्दर
और यदि हमारा हृदय है उज्जवल और सुन्दर
तो हमको सौन्दर्य ही दीखेगा
सभी जगह सब वस्तुओ के अन्दर ★

卐 देखने वाले की आँख में
सौन्दर्य की जगमगाती ज्योति
से अधिक ज्योतिर्मय है
चाहने वाले के हृदय में उसके प्रीत का मोती ★

卐 अत्यन्त लावण्य मयी सुन्दरता का
मैं बन गया गुलाम
और जब पूर्ण सौन्दर्य देखा और परखा
तो मेरे बन्धन टूट गये तडातड़ तमाम ★

卐 तुम भी सुन्दर, मैं भी सुन्दर
हमारी सुन्दरता से बनी यह धरती
प्रेम की किरणें जहा हैं झरती
हमारे प्रेम ने फैलाया प्रकाश
जिसमे प्रकट हुआ परमेश्वर अविनाश ★

卐 जीवन भर हम सौन्दर्य की खोई पूंजी
खोजते रहते हैं
और खोज की उन सब विधिओ व प्रतिक्षाओ को
हम जीवन की गति और प्रगति कहते हैं ★

卐 प्रेम है, बारीक सूक्ष्म कोमल घटना प्रवाह
वह वंचित रहता है इससे जिसने की इसकी चाह
पर जिसने माँगा ही नही उसे स्वयं मिल
गया, असीम अथाह ★

卐 प्रेम है ऐसा दिव्य शब्द
जिसे सिखने वाले प्रेमपूर्ण हाथ
और जिसे ज्योतिर्मय पृष्ठो पर
आनन्द व प्रेम से परिपूरित हो
लिखा किसी ने स्नेह के साथ ★

卐 मोती वह ज्योतिर्मय मन्दिर है
जिसे दुख और कष्ट के हाथो ने
एक रजकण के आस पास किया निर्माण
और प्रेम और आनन्द पूर्ण प्रभो के हाथो ने
विवेक और चेतना के स्वर्णिम कणो से
बना दिया अनुपम इन्सान ★

卐 बुल बुल के प्रेम भरे गीत तभी फूटते है,
जब वह अपने हृदय को देती चीर
और नयनो मे छलकता नीर
इसी प्रकार जीवन की गहराइयो मे से
प्रेम का श्रोत तभी फूटेगा
जब हम प्रभो के मिलन की तडफ मे
हृदय फाडकर, बतादें हमारे चाह की पीर ★

卐 मैं आपको प्रेम देता हूँ तो यह भिक्षा नही, है हृदय का दान
और आप प्रेम देते हैं, तो मेरी मांग पर नही
केवल करते, भावो का प्रतिदान
प्रेम लेने व देने वालो मे, न कोई भिखारी, न दीन
जिसने दिया या लिया, दोनो हो गये प्रभो मे लीन ★

卐४ हृदय है बहती नदी
मन है स्पंज समान
आश्चर्य इस बात का है
कि बहते रहने की अपेक्षा
हम चूसने मे ही समझते है
अपनी शान ★

卐 आत्मा के साथ, शरीर का निर्माण होते ही
मेरा जन्म हो गया
और जब आत्मा और शरीर के बीच
अभिन्न प्रेम होकर वे एकाकार बन गए
तो मेरा जन्म खो गया। ★

卐 माता के मन के, शान्त अरमान
हृदय वीणा की अप्रकट तान
प्यार से संजोये बच्चे के
होठो पर, सहजखेल कर
प्रकट करती सुखद जीवन सगान ★

卐 बहुत समय तक माता के नीद के
स्वप्नो का बने सहारा
और आँख खुली तो जन्म हो गया तुम्हारा
फिर वर्षो तक, तुम हो गये, एक से अनेक
कुछ का तो पश्चाताप हुआ
और ठीक निकल पाए कुछ एक ★

卐 पत्नी पति से प्रेम करती है
और संतान को प्रेम करती है माता
पर पति या पुत्र के माध्यम से
व्यक्ति अपना ही अपने प्रति प्रेम है जताता ★

卐 चतुर पत्नी वही है जो जानती है
कब किस पर रखनी है दृष्टि ?
और कब किसकी दृष्टि से ओझल कर
अपने अनुकूल बना लेती सृष्टि ? ★

卐 नारी चरित्र को जिसने लिया है जान
प्रतिभा की, उसे हो जाती सूक्ष्म पहचान
मौन के रहस्यो से उसका हो जाता साक्षात
और मधुर स्वप्नो से जाग कर
वही देख पाता, मधुर प्रभात ★

卐 स्त्री के मन मे सौन्दर्य का अर्थ
है शक्ति और बल
और पुरुष के मन का सौन्दर्य है
कमनीय कोमल नारी का तन चंचल ★

卐 एक सबल साहसी नर
एक कोमल स्नेहिल नारी
दोनो ने एक दूसरे पर दृष्टि डाली
कि सृष्टि ने पा लिया आकार
और जब दोनों ने एक दूसरे को छू लिया
तो अनन्त की आत्मा ने पा लिया विस्तार ★

卐 हर व्यक्ति जगत मे
दो नारियो से करता है अवश्य प्यार
एक तो वह जिसका वह
अपनी कल्पना से बनाता आकार
और दूसरी वह जिसके जन्म के
प्रकट नही हुए अभी आसार ★

卐 मैंने देखा एक स्त्री को
और उसे अच्छी तरह लिया पहचान
उसके अगणित अजन्मे बच्चों को लिया जान
और उसमे मुझे देखा
लिया मेरे पुरखो को जान
जिनका उसके जन्म के पूर्व
हो चुका था अवसान ★

卐 आओ हम तुम आँख मिचोनी का खेले खेल
और फिर लगाए एक दूसरे का पता
हृदय मे छिप गए तो
अपने को तुम स्वयं ही दोगे बता
और शरीर मे छिप गये
तो खोजना हो जायगा व्यर्थ
मैं भी चाहूँगा तुम सदा रहो लापता ★

卐 किसी कोमलांगी के आँख के छोटे से
डबरे से निकली, आँसुओ की धार
और सागर की विशाल जल राशि मे
भरा है एक सा ही खार
एक उमड़ने पर हिला देता, सृष्टा का हृदय
और दूसरा हिला देता है, उसका संसार ★

卐 नारी तुम धन्य हो कि
कष्ट, पीडा, विषाद को कॉख मे छिपाकर
कोमल और मधुर रहा, तुम्हारा स्वभाव
अभावो के चक्रव्यूह मे फंस कर भी
होठो की, हल्की सी मुस्कराहट के आवरण मे,
छिपा दिये तुमने अपने चेहरे के भाव ★

卐 नर और नारी ने परस्पर चूम लिये
एक दूसरे के अधर
और लगा कि एक दूसरे के प्यार से आनन्द पाया
पर सच तो यह है कि
अधरो के बीच हमने अपना ही प्यार सहलाया
और अपने से अपने को ही आनन्द केवल आया । ★

卐 तुम मुझे प्रेम करती रहो और मैं चाहूँ तुम्हारा प्यार
या मे तुम्हे प्रेम करता रहूँ और तुम मुझे मान लो भरतार
इससे हम दोनो ही रहेगे गुलाम और दीन
पर जिस क्षण हम एक दूसरे मे झाक कर
अपने से ही प्रेम करने लगेंगे
उसी क्षण हम सच्चिदानन्द बनकर होगे स्वाधीन ★

卐 पुरुष चित्त मे गति है प्रगति है
और है सृजन की शक्ति
उससे भी महत्वपूर्ण है स्त्री चित्त
जिसमे स्थिति से है परम्परा है
और है जगत् को पोषण करने की युक्ति
इसलिये सारे कार्य प्रारम्भ किए पुरुष ने
और स्त्री चित्त बनकर उसने पाई मुक्ति ★

卐 स्त्री का अस्तित्व है, शाश्वत सम्पूर्ण
जो श्रृद्धा से जग की समग्र से देता जोड
पुरुष विश्लेषण कर, जीवन के अणु अणु को देता तोड
उत्तेजना अनुशासन मे पलता, पुरुष जीवन
समर्पण व विसर्जन मे भरा, नारी के तन का कण कण
मनुष्य की महत्वाकाँक्षा व भविष्य दृष्टि ने
पैदा किया केवल तनाव
नारी ने वर्तमान मे जी कर
अस्तित्व का मुखरित किया वहाव ★

卐 काम का प्रारंभ होता, सदा दूसरी इन्द्रियों से
यौन पर होता उसका सुखद चरमअंत
जहाँ समय, अंह और विचार
समाप्त हो जाते हैं, और तन पर छा जाता शून्य अनन्त ✶

卐 तर्क और बुद्धि है नर, भावना और श्रद्धा है नारी
दोनो के समन्वय से, संचालित होती सृष्टि सारी
भावना के आगे, जब बुद्धि बन गई लाचार
तो काम से आहत होकर, नर ने मानी हार
और जब बुद्धि ने, भावना पर किया प्रहार
तो अंह ने सीना तानकर, किया भीषण नरसंहार ✶

卐 मनु के पास थी बुद्धि अक्षय, श्रद्धा के पास
था सम्मोहक हृदय
मनु ने तर्क से हिसाब लगाया,
श्रद्धा के हृदय मे प्रकाश नही आया
वे एक दूसरे से बिना मिले रह गए
सृष्टि के सारे फूल अनखिले रह गए
मनु की बुद्धि मे हुआ, समग्रता का विकास
श्रद्धा के हृदय मे प्रेम का फूट पडा प्रकाश
दोनो हो गए एकाकार,
अर्द्धनारीश्वर ने ले लिया अवतार ★

卐 श्री कृष्ण थे अलौकिक सतह का विस्तार
और राधा मे था न, गहराई का पार
श्री कृष्ण राधा को पाने, आतुर हो उठते हर बार
और वह जन्म जन्म तक प्रतीक्षा करने रहती तैयार
एक घटना थी, दूसरी प्रवाह
इसलिये रह सकी उन्हे एक दूसरे की चाह
अस्तित्व के साथ वही हो सकता एकाकार
प्रार्थना पूर्ण प्रतीक्षा मे दिया, जिसने जीवन वार ★

卐 राधा ने श्रीकृष्ण को समर्पित कर
अपना गवां "मैं" दिया
और श्रीकृष्ण ने 'तू' भूलकर
उसे अपने मे रमा लिया
'तू' और 'मैं' दोनो हो गए सलीन
राधा और श्रीकृष्ण हो गए सदा स्वाधीन ☆

卐 युगो युगो मे सोए हुए है शेष नाग पर
भगवान् विष्णु लक्ष्मी के साथ
उनके तन को पुलकित कर रहे है
उनकी चचला के हाथ
क्षणो मे कट रहा है, युगो का काल
जैसे उड जाता उषा का रग लाल ☆

卐 राधा ने श्रीकृष्ण से कहा
दो मिनट तो, बैठिए आप मेरे पास
आपको देखने की, हर समय लगाए बैठी आश
श्रीकृष्ण, उसके पास, घंटो बैठे, बहुत ही निकट
पर राधा के, पूरे हुए नही, कभी दो मिनट
प्यार की गहराईयो मे रुक जाता काल का प्रवाह
समय कभी माप ही नही सकता
दो गहरे हृदयो की चाह ★

卐 कल तक राधा कहती थी
मैं आपकी बन गई छाया
तन मन जीवन हो गया एकाकार
मेरा कुछ भी अलग न पराया
आज रुठ गई तो कहने लगी रहूंगी अलग
कर दो स्वामिन् मुझे आपसे विलग
श्रीकृष्ण ने कल की बात याद दिलाई
और स्नेह से रखा सर पर हाथ
कि दोनो बोल उठे
जन्मजन्मान्तर हम रहेंगे साथ ★

卐 राधा ने कहा भगवान मेरे तुच्छ अपराधो के लिये
आपने मुझे कभी कुछ कहा ही नही,
मैंने कभी आपका उपालभ सहा ही नही,
केवल प्रशंसा पात्र बनकर, मुझसे जाता रहा ही नही।
तो भगवान् ने कहा कि
तुम्हारे छोटे छोटे अपराधो का यदि मैं लगाता योग
तो गणित मे ही उलझ जाता,
और प्रेम और आनन्द की भाषा मे
तुम्हारे गुणो का सुख कभी पाता न भोग ★

卐 गोरी ने गिरीश से कहा
आप मेरी करते नही परवाह
और मुझे निरन्तर रहती आपकी ही चाह
आप दूर रहे तो मैं चली जाऊंगी घर
सृष्टि रुक जायगी, अकेला क्या करेगा नर
दो एक जोर से डाँट
फिर संकल्प लिया, कि जन्म जन्म अभिन्न रहेगे
तो अजन्मी सष्टि के, चेहरे पर छा गई मुस्कराहट ★

卐 गोरी और गिरीश के, नित्य हो जाती तकरार
और फिर उभर कर, फूट पडता गहरा प्यार
सौगन्ध भी खाई, पर तकरार रुकी ही नही
प्यार की ऊंचाइएँ, तनिक झुकी ही नही,
तब समझ मे आया कि उनका
इतना अनन्त और असीम है प्यार
कि उस पर, तनिक सी चोट
पैदा कर देती तकरार ★

卐 नदी के तट पर, इधर रेत उधर झाग
मेरे चरण बढ रहे हैं, उस पार
बिखर गये सब झाग, खा हवा की मार
मिट गये चरण चिन्ह, सह पानी का बहाव
पर अनन्त काल तक रहेगा,
नदी का तट और पानी की धार ★

卐 जगता हूँ तो सब कहते,
है अनन्त समुद्र और तट अनन्त,
सारी दुनियाँ यह रजकण है,
पल पल क्षण क्षण हो रहा अन्त
स्वप्न मे मैं सब से कहता,
मैं स्वयं अनन्त, असीम सागर
है तीन लोक मेरे तट के रजकण,
मैं हूँ विशाल नटवर नागर ★

卐 सागर के पास बैठा, जब मैं उसके साथ
और सरिता के बारे में की बात
तो उसने मुझे काल्पनिक व अधिक बात
बनाने वाला कह दिया,
फिर मैंने एक दिन सरिता से की सागर की बात
तो उनसे मुझे निंदक और घटा कर बात
बताने वाला कह दिया ★

卐 जिसने सुख चाहा, माँगा, उसने पाया सदा दुख
और जिसने दुख को स्वीकार किया
उसे मिला, अनचाहा सुख
जो जैसा है उसे स्वीकार करने का, जिसने समझा है मर्म
उसके लिए सर्वत्र आनन्द है और वही पर
जागृत होता है धर्म । ★

卐 आनन्द सुख और ज्ञान व्यक्ति की निजी संपत्ति है
जिस पर है नही किसी का अधिकार
जब चाहा अंतर्मुख बन कर प्राप्त किया
और मिल गया वही असीम अन पार
इस संपत्ति को घेरे हुए है तन की दीवार
जो बाहर से तो है बंद और अन्दर
खुलता है जिसका द्वार ★

卐 जिसके जीवन मे पवित्र विचारो
के झरोखे से झांकता
सत्य ब हर आया
उसके सग आनन्द सदा रहेगा
पोछा करेगा, जैसे तन की छाया ★

卐 दीपक बनकर आसपास किया प्रकाश
पुष्प बनकर, आसपास फैलाई सुबास
सरोवर बनकर, किसी की बुझाई प्यास
हृदय देकर, किसी का मिटाया सत्रास
विशाल सृष्टि मे मेरी साधना लायेगी
निश्चित ही फल
मेरा प्रकाश, सुबास व मीठास देगा
सारे विश्व को संबल ★

卐 बगिया मे फूल झूम झूम कर मुस्करा रहे थे
मादक सुवासित गंध लिये इतरा रहे थे
माली ने कहा "फूलो' फूलो मत
तुम्हारा जल्दी होना है बलिदान
तो फूलो ने सोल्लास कहा" स्रष्टा बतादे
हँसते हँसते बलिवेदी पर चढने से बडा जग मे
है कौनसा वरदान ?" ★

卐 बरगद के, न तो फल लगते है, न पुष्प खिलते है
पर सघन छाया देकर, वह देता सबको विश्राम
इसी आशायें कि कोई बुद्ध यहाँ,
बोधि प्राप्त करेंगे,
या राह चलते, बसर करेंगे कोई राम ★

卐 आज तेरी खुशी के खिल रहे है फूल
या कि तेरे दुख के चुभ रहे है शूल
चुनाव किया कभी, और अब हो रहा अनुभव
बीज बोया कभी और लाया अब फल
बीज और फ़ूल के बीच लम्बा अन्तराल
जन्म और मरण मे छिपे इसमे अनेको सवाल ★

卐 जीवन की पोथी थी सहज सरल,
पर उसका, जटिल, क्लिष्ट, हो गया अनुवाद
ज्ञान का स्वरूप था, प्रकाशमान् निर्मल
पर उसके सचय मे हो गया घोर विवाद
सच तो यह है कि हम भाव और प्राण को भूल गए
और मस्तिष्क के विचारो का, समूह ही रह गया याद ★

卐 एक कहता, आधी गिलास भरी हुई
दूसरा कहता है, आधी खाली
एक रात के, आगे पीछे देखता है दिन
दूसरा दिन के, आगे पीछे देखता रात काली
एक को, कांटो से घिरा लगता सुमन है
दूसरा, कांटो की गोद मे पाता गुलाब की लाली
सारे जगत के दृश्य, एक से रहेगे सदा
दृष्टि एक विषाद भरी, एक आनन्द मे मतवाली ★

卐 हममें से कुछ को कहते काली स्याही
और कुछ को लोग कोरे कागज बतलाते
पर कालापन नही होता
तो हममे से कुछ गूंगे ही रह जाते
और सफेदी नही होती
तो कुछ साफ अन्धे नजर आते ★

卐 आँखो मे पडा तुच्छ तिनका
ओझल कर देता पहाड़
कानो मे ठूँसा रुई का फुआ
सुना नही सकता शेर की दहाड
दाँतो मे रहा नमक का कण
खारा कर देता सारा ही अन्न
दृष्टि सही बनती नही तब तक रहता अज्ञान
और परमेश्वर की सत्ता से
वह रह जाता अनजान ★

卐 मन्द गति वालो पर तो आता है तरस
मन्द मति वालो पर जाते ही बरस
यह बडा ही विचित्र व्यवहार है आपका
कि आँख के अन्धे को मानते लाचार
और हृदय के अन्धे को ताडते बेकार ★

卐 कुछ लोगो को हँसते हँसते रोते देखा
कुछ को प्रकाश में सोते देखा।
कुछ रोने मे हँसते जाते थे
कुल अन्धेरे मे अपने को जगा पाते थे
जागे और हँसे वे ही जिनको जीवन-से प्यार
रोए और सोए वे ही जो मानते जीवन बेकार ★

卐 अपने धन दौलत वैभव को फैला कर
किया आपने मेरा सम्मान
और मैंने आपको दिया हृदय का दान
पर दुख हुआ मुझे उस समय
जब आपने अपने को आतिथ्य देने वाला समझा
और मुझे मान लिया महमान ★

卐 कितना मुर्ख है, वह आदमी
जो अपने आँखो की घृणा पर
चढाता होठो की मुस्कराहट का झोल
और कितना अन्धा है वह आदमी
जो अपने जेब के सोने चाँदी से
मेरे हृदय की लेना चाहता है मोल ★

卐 अपने सामर्थ्य से जो अधिक देता है
उसे कह सकते है सच्चा दान
और जो आवश्यकता से कम लेता है
उसका सच्चा है स्वाभिमान
नर और नारी तो सभी है
सज्जन की है केवल यही पहचान ★

卐 अपने स्वजन मित्र का दुख देख न सके
और तुमने कर दिया कुछ दान
अब उसे दया कह कर स्वर्ग खरीदना चाहते हो
तो यह भारी भूल होगी
क्योकि यह तो तुमने किया है
केवल अपने पर अहसान ★

卐 जो मुझे बुद्धि और विवेक की बातें बताए
उसे मैं चाह कर करता हूँ प्यार
और जो अपनी कल्पना के स्वप्न खोले
उसको मैं सदा करता रहता मनुहार
पर मुझे उनसे झिझक और लज्जा है
जो करते मेरी सेवा और देते सत्कार ★

卐 दर्पण के सामने खड़ा नवयुवक
गर्वित होकर बार बार निरख रहा था अपना नूर
कि अन्दर से आवाज आई
जरा भीतर के यन्त्रालय को भी देख लेना
जो तेजी से उडेल रहा है गन्दगी भरपूर ★

卐 गंगा का गन्दा जल भी पवित्र कहलायगा
स्वच्छ श्वेत कफन का कपडा किसी भले
आदमी के कभी काम नहीं आयगा
अन्दर की जागृत चेतना जहाँ है
वहाँ गौण बन जाता, ऊपर का व्यवहार
और अन्तर जहाँ रोता है
वहाँ सारे कृत्रिम आचरण लगते निस्सार ★

卐 दिन पर कागज के धरातल पर
मुंह के बल चलती रही
चाकू की धार पर जिन्दगी बार बार पलती रही
विश्वास भर कर पेंसिल ने कहा
ससार का व्यवहार कैसा है निराला
तो प्रत्युत्तर मिला कि ऐसा ही फल उन सबको मिलता है
जिनका अन्दर का हृदय है काला ★

卐 सरोवर के किनारे कौवे ने आकार
पनिहारिन के भरे घडे से पिया पानी,
तो आश्चर्य हुआ कि अपरिमित स्वच्छ जल राशि को छोड
सीमित घडे पर चोंच मारने की, उसने क्यो ठानी ?
पर क्या यह सच नही है कि विश्व मैत्री के अपार प्रेम
को छोड, हमने अपने को सीमित रखने की बात ही जानी

卐 हरी हरी घांस पर खडखडा कर सूखा पत्ता गिरा
घास वोल उठी, आराम कर दिया हराम
पत्ते ने कहा, देवी आपको है आराम की चिन्ता
और मेरे तो संकट मे पड़ गए है प्राण ★

卐 पतझट की ऋतु मे, मैंने अपने वाग में गाड दिये
मारे अपने शोक सताप, वेकार
वसत मे वही मिल गई फूलो की वहार
पाडोसियो ने आकार तभी मागी एक चीज
कहा, अगली ऋतु मे हमको देना
इन फूलो का वीज। ★

卐 लोग कहते है कि तुम जानते व्यवहार
क्योकि जिनकी है कल्पनाओ से प्यार
और जो बनाते, सुखद मधुर स्वप्नो का संसार
उनके गाढे पसीने की कमाई,
तुमने ली छीन, और रोटी धाप खाई
और वे आख फाड रहे तुम्हे निहार ★

卐 जीवन के न्याय पर विश्वास
कैसे छोड दूँ होकर उदास
जब मैं देखता हूँ कि
मखमली गद्दो पर, सोने वालो से
अधिक कठोर धरती पर, सोने वालो के
स्वप्नो मे बसता है, सुखद मधुमास ★

卐 जिस दिन स्वतन्त्रता से
न्याय का साथ जायेगा छूट
निश्चित है, उसी दिन
दोनों का ही भाग्य जायगा फूट ★

卐 एक जड मूर्ख इन्सान
एक अपूर्व बुद्धिमान
इन्सान के बनाए नियमो को
तोड़ने मे दोनो है एक समान
पर एक सदा के लिए, पकड़ मे आ जाता है
और दूसरा पकड़ा जाय, तो साफ छूट जाता है। ★

卐 अपराध क्या है ? में रोज देखता हूँ
किसी आवश्ययकता का नाम,
या जहाँ अस्त होता राम
उदय होता काम
उसके प्रकट है लक्षण तमाम ★

卐 मैं अपने उन सब अपराधो को करता स्वीकार
जिनका, मैंने, स्वप्न मे भी किया, न विचार
केवल इसलिए कि, मेरे संगति मे,
संगीन अपराधी भी बैठ जाये,
तो हीन भावना का, हो जाय न शिकार ★

卐 जेल कभी बुरी नही होती
बुरी है तो एक कैदी की कोठरी से दूसरे
की कोठरी के बीच की दीवार
वरना जेल के निर्माता रहें, रहे सतत पहरेदार
मुझे तनिक दुख नहीं है क्योंकि जैलखाना
ही तो है सारा संसार ★

卐 एक बड़ा धनवान अमीर
एक गरीब निर्धन दास
दोनों रहे उदास
एक वर्ष भर की भूख
एक घड़ी भर की प्यास 卐

卐 सिंहासन से उतरे राजाओ का हाल
मन्त्री पद से च्युत वृद्ध नेता की चाल
पुराने एम. एल. ए की चुनाव मे हार
धन्ना सेठ पर पड गई घाटे की मार
तेज तर्रार अफसर रिटायर हो जाय
हसीन वेश्या की जवानी खो जाय
ये सब अतीत की राख सर पर ढो रहे है
और चूक गया अवसर कह कर पल पल रो रहे है ★

卐 मैंने केवल दो ही तत्व जाने
एक सौन्दर्य, दूसरा सत्य निराकार
सौन्दर्य बसता है प्रेमियो के हृदय में
जग मगाहट करता है जिसमे संसार और सत्य
किसान मजदूर की भुजाओ से फूट कर
कृषि और उद्योगो मे लेता आकार ★

卐 हरे भरे लहलहाते खेतो मे
मस्ती भरे गीत गाकर नाचता किसान
रूखी रोटी खाकर पथरीली जमीन पाकर
गहरी निद्रा मे सुलाती उसे दिन भर की थकान
है भुजाओ मे शक्ति जिसके पाँवो मे गति
सच्चा कर्मयोगी वही, उसका निश्चित है ही कल्याण ★

卐 दीपक के पूरे तेल का शोषण कर
लौ, ने अपनी ज्योति समझ उठाया सर
अगणित मजदूरो के श्रम से अपना पोषण कर
धनपति ने अपना धन समझ भरा अपना ही घर
पर एक ही हवा के झोंके से लौ की मिट जाती है हस्ती
और इनकिलाब की आँधी आने से
उजड जाती श्रीमन्तो की बस्ती ★

卐 भव्य भवन के निर्माता, टूटी झौपडी मे करते बसर
कसीदा और जरी के थान बुनने वाले,
ढांक नही सकते अपना तन
धरती मे रक्त और पसीना बहा धान उत्पन्न करके
कृषक भूखा ही रहता, पाता नही पूरा अन्न
अगणित श्रमिको के हाड मास का श्रम
बढा रहा केवल श्रीमन्तो के तिजोरियो का धन
इस स्थिति को कहाँ तक टालोगे, कहकर कर्मों का फल
इनक्लाब का एक ही तूफान देगा
समाज की व्यवस्था बदल ☆

卐 काटो की बाड से घिरे वृक्षो पर जब फल लद जाते है
उनके मीठास व रस को देख राही ललचाते है
चोरी छिपे पत्थर या लाठी से करते प्रहार
पत्ते और टहनियाँ टूट कर पडती काटो के पार
इसी तरह पू जी के अनावश्यक संग्रह को
सह नहो सकते दीनहीन
सहज नही मिलने पर चाहत्ते
लेना उसे झपट और छीन ★

卐 बेघरबार निर्वस्त्रो के खाली पेट की आग
मे जलकर राख बन जाते है दिल के भाव
चेतन को जागृत करने की बात उन्हे भाती नही
आत्मा और परमात्मा के ज्ञान की बात सुहाती नही
पीडित कर रहे उसे अपनी आवश्यकताओ के घाव
जो तीर मे बिंध गया, उसे तो चाहिये उपचार
क्यो कहां कैसे आया ? यह पूछना बेकार
भूखे पेट न रट सका न बन सका राम
तृप्त आत्मा में ही केवल रम सकेगा
भगवान का नाम ★

卐 हर सांप मे संपोलिया जन्म पाता है
जो बड़ा होकर सांप को निगल जाता है
समाज मे पैदा होती युवा शक्ति
जो विद्रोह कर उसी मे पाती है मुक्ति
हर सभ्यता और संस्कृति मे पनपता नव उल्लास
जो नव निर्माण के नाम पर उसका मिटा देती इतिहास
जन्म का मौत में होता विस्तार
सृजन और विध्वंस को हम कहते समान ★

卐 हर युग में विद्रोही ने परम्परा का विरोध किया
और सत्ताधीश श्रीमन्तो ने दिये उसे प्रलोभन
कुछ डिग गये पर कुछ ने सघर्ष झेल कर
भी कर डाले परिवर्तन
समाज मे जगा विश्वास जागरण की जगी आश
फिर परिवर्तन ने परम्परा का कवच पहन लिया
विद्रोही ने विद्रोह दबाने सत्ता को गहन किया
परम्परा और विद्रोह का इतिहास दुहरायेगा
विद्रोह परम्परा बन गई तो फिर विद्रोह आयेगा ★

卐 दार्शनिको का एक झुण्ड जा रहा था सरे बाजार
सिर पर टोकरे रखे बुद्धि लो, बुद्धि लो
की कर रहा था पुकार
कितना विचित्र है कि
दार्शनिको को भी भरना पडता जब पेट
तो बुद्धि का चढाना पडता श्रीमन्तो के भेंट ★

卐 जीवन किसी दूसरे का अनुसरण नही
यह तो है स्वयं का स्वयं के द्वारा उद्घाटन
दूसरे के जैसे होने की प्रक्रिया ही नही है
यह तो स्वयं की खोज का करता स्वयं आयोजन
और इसका एक ही साधन
प्रभो की वेदि पर, कर दें प्राणो का अर्पण ★

卐 हमने एक दूसरे को नहीं जाना
न स्वयं को पहचाना
पर जब तुम्हारे हृदय की धड़कन मे
अपना स्वर पाया
और दर्पण मे तुम्हारा चेहरा देखकर
कह न सका पराया
तो मैंने तुम को भी जान लिया
और स्वय को भी पहचान लिया ★

卐 न व्यवस्था थी न आकार
डगमगा रहे आचार—विचार
सद्बुद्धि ने हाथ पकड दिया पवित्रता का सम्बल
क्रिया शील हो गया तन
सीधा हो गया मन का बिगडा सन्तुलन
सफलता के राजमार्ग पर प्रशस्त हो उठा जीवन ★

卐 मैंने अपने ही जीवन से पूछा
मैं चाहता हूँ सुनना मृत्यु के बोल
और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा
जब जीवन गर्ज कर जोर से बोला
देख लो मौत मेरे अन्तर को खोल ★

卐 दूसरो की सेवा मे खपा देना चाहता हूँ अपना जीवन
पर यह सम्भव तभी होगा
जब मेरे भीतर के 'मैं' से खाली हो जायगा मेरा मन
और दूसरो के भीतर झाँकने पर
पाऊंगा मेरा ही नाचता हुआ तन ★

卐 जिस प्रभो की कृपा से जन्मते ही दूध मिला
और प्राणो में मिला श्वांस
जिसने हमारे जीने का किया योजना बद्ध इन्तजाम
उससे उदास हो हम भूल गए उसका नाम
और अपनी विशद्‌योजना बना कर
उसकी विफलता से हो गये निराश
और खो बैठे उसका विश्वास,
तभी प्रारम्भ हुआ सन्त्रास ★

卐 कितना आनन्दमय है वह जीवन
जो फुल की तरह, हल्का, सुवासित बनकर
प्रसन्नता से झूम रहा है
जिसके स्वच्छ सुन्दर लुभावने तन को
रंगीन तितलियो का झुंड, प्यार से चूम रहा है।
और कितना भार भूत, दुखी है वह जीवन
जो हड्डियो के ढेर की तरह कुरुप गंदा, भारी
कि जिसके दुर्गन्ध से, पीडित हो जाती दुनिया सारी।

卐 सारा विश्व एक पुल है
जिसमें होकर इस जन्म से होता है व्यक्ति पार
पर जिसने, इस पर महल बनाने का
प्रयास कर, रहने का किया विचार
उसके सारे स्वप्न ढह गये,
और उसका आना हो गया बेकार ★

卐 एक बीज का व्यापक विस्तार
घेर सकता सारा ही संसार
और एक क्षुद्र इच्छा का जब होता विस्तार
तो घेर लेती स्वयं मे सारा संसार
जिसका मिलता, कोई आर न पार ★

卐 जीवन स्वयं धारा है जिससे प्रवाहित है वेग और बहाव
उसे रोक कर साधना की नई धारा पैदा की
तो उनसे आएगा उपद्रव और छायेगा तनाव ★

卐 जीवन अस्तित्व है, वर्तमान का अनुभव
भूत और भविष्य मे न उसका अंत न उद्भव
पर कामनाओ से भरा हुआ मन
अतीत से लेता रस और भविष्य के देखता स्वप्न
कामनाओ से जब रीता हो जायगा मन
स्वयं ही प्रवेश कर जायेगा वहां जीवन ★

卐 जीवन के केन्द्र मे पहुँच कर गहराइयो को
माप सकता केवल निष्काम मन
और काम युक्त मन तो बाहर की परिधि के
चक्कर काटा करता है
उसे पता ही नही चलता कहा बसता है जीवन ★

卐 गाधी पर लगी एक गोली ने
कोटि कोटि हृदयो को दिया चीर
और उनके कलेजे का रक्त
कोटि कोटि दृगो से वह गया बन नीर
एक व्यक्ति पर की गई चोट से
घायल हो गये कोटि कोटि जन
एक व्यक्ति की मौत से
सारा राष्ट्र हो गया मरणासन्न
एक व्यक्ति मरा इतिहास यह सुनायेगा
युग युग तक जीवित है सत्य यह गायेगा। ★

卐 अपने पूर्वजो की परम्परा इतिहास
पर पीछे देखते हुए हम करते है पाप
और आगे देखकर भी हम करते वही
जब आने वाली संतानो पर
अधिकार जता कर देना चाहते संताप ★

卐 शाति के लिये जिसने प्रयोग किया बल
उसके सारे प्रयास हो गये निष्फल
आपस मे एक दूसरे को समझने का किया विकास
कि शातिमय संसार मे छा गया उल्लास ★

卐 सारे ही जन कहते है कि पेट तो ज्यों त्यों भर जाते हैं
पर मँहगाई के जमाने मे बचत होती नही
और पेटी भरती नही
तो मैंने कहा पेटी तो फिर भी भर जायगी
पर पेट कभी भरा न भरेगा
क्योंकि पेट की भूख कभी भरती नही। ★

卐 आंधी और तूफान मे हिल जाती है
भव्य इमारत और कठोर चट्टान
पर मखमली दूब नही छोडती अपना स्थान
और उसकी अपरिवर्तित रहती शान
तभी तो सच है कि जिसने की लाघवतास्वीकार
उस पर सारे प्रहार हो जाते बेकार। ★

卐 एक ही धरती एक ही आकाश
एक हवा पानी एक ही प्रकाश
बाग मे फले नीम इमली और आम
कडवा, खट्टा मीठा फल देते तमाम
क्या करे वातावरण, कुल या परिवार
स्वयं की कमी प्रकट करती व्यवहार। ★

卐 प्रमादी और विषयासक्त सोते ही रहे
निष्क्रियता मे जीवन वे खोते ही रहे
और अनासक्त अप्रमादो जागते रहे
दुष्कर्म उनसे दूर भागते रहे
किसी का जगना है ठीक और किसी का सोना
किसी को निष्क्रियता है श्रेष्ठ किसी का सक्रिय होना। ★

卐 तनिक से तुच्छ फलो को लेकर
खजूर का पेड अंहता से छूना चाहता आकाश
रस भरे मीठे आमो का वृक्ष
विनम्रता से धरती पर झुकने का करता प्रयास
तब लगता कि यह सच है
अल्पता और तुच्छता मे पलता अंहकार
और पूर्णता व महत्ता मे विनम्रता बनती साकार। ★

卐 जीवन की गहराइयो मे उतरा तो पाया
न तो मैं हूँ पापियो से ऊँचा और उत्तम
और न अवतारो से हूँ मैं नीचा और अधम । ★

卐 दुख और सुख के बीच जगता है चेतन
वही रुपान्तरित हो जाता मन
जिस प्रकार स्वर्ग और नरक के बीच
संक्रमण काल है, मनुष्य का जीवन ★

卐 सारे जग मे एक ही क्रिया चला करती है
भरे को खाली और खाली को भरा करती है
पर अंतर्जगत मे सारी क्रिया हो जाती है व्यर्थ
अंदर उतरे कि मिल जाता है जीवन का अर्थ । ✱

卐 निर्मल मौन शात अनाग्रही मन
बिना प्रतिरोध ग्राहक भाव से खीच लेता जीवन
तभी कोई सदगुरु जाता है मिल
और समर्पित जीवन में सुवासना जाती है खिल । ✱

卐 दुख संत्रास व असफलताएँ बनती रही
जिसके जीवन का अवलबन
फिर भी उनसे विलग रहा जिसका मन
और प्रसन्नचित पुरुषो के साथ,
जो आनन्द के गीत गाता
प्रेम की बाँसुरी बजाता
उसी को हम कहते हैं जागृत जीवन । ★

卐 जीवन स्वयं मे है एक महत्वपूर्ण विधा और सुन्दर कला
जिसमे आनन्द का स्त्रोत और प्रेम का चित्र लगता भला
अहो भाग्य हमारा नित्य देखते प्रभात
आशा भरा प्रकाश, तेज उष्णता साक्षात
सिन्दूर लुटाती संध्या और सितारो भरी रात
ऐसा सुन्दर जीवन प्रभु की दया से मिला
पर सावधान बिना संरक्षण मुरझा न जाये
यह चेतन का फूल जो धरती पर खिला । ★

卐 मैं कभी कभी जानकर अपने लोगो के
धोखे और अत्याचार का हो रहा शिकार
और हँसता हूँ उनकी बुद्धि पर
जो समझते है कि मैं हूँ अनजान लाचार
मेरी तो आत्मा के हट रहे विकार
और इसलिये मेरा यह विचित्र व्यवहार। *

卐 चट्टानो के वज्र वक्षस्थल को चीर
स्थान स्थान से फूट पडता है नीर
और वही पर कोमल घास पत्ते और पौधे
घेर लेते चट्टान का शरीर
इसलिये यह सब ही तो है
कि कोमलता जहाँ तहाँ बना लेती स्थान
और छोटे छोटे पौधे छेद देते है कठोर चट्टान *

卐 छोटे छोटे से कंकड पत्थर पथ मे ठोकरो की खा मार
अपने अस्तित्व को मिटा देने को रहते है तैयार
और तभी ठोकरो से पीसकर उनके रजकणो ने
आकाश मे उडकर करली सूर्य से बात
व हल्के बनकर ऊँचा उठने की बन गए
प्रेरणा साक्षात । ★

卐 एक गहरा व्यक्ति उतर रहा था गहराई मे
और ऊँचा व्यक्ति रहा था ऊंचाई मे
पर मुझे तो पसद बडे हृदय का वह व्यक्ति है
जो विशाल क्षेत्र मे काटता है चक्कर
न गहरा उतर कर न ऊंचा ही चढकर ★

卐 महत्वाकाक्षा और कल्पना है जिनका जीवन
रहना चाहूँगा उनके साथ छोटा से छोटा बन
पर जो महत्वाकाक्षा रहित और कल्पनाहीन
उनमे बडे से बडा बनकर रहने मे भी
कसमसाहट कर रो पडेगा मेरा मन। ★

卐 जो तुम्हारा गौरव और सम्मान उस वस्तु मे नही
जो तुम्हे प्राप्त हो रही अन्जान
पर उस वस्तु मे है जिसकी छटपटाहट व तडफ मे
तुम कर सकते हो अपना जीवन बलिदान ★

पर मेघ पात्र अपात्र का विचार किये बिना
अपना अपनत्व देते है लुटाये
जंगल की सघन वृक्षावली को पानी दे पाए
गिरि शिखर घाटियो को प्यार से नहलाए
मरुवासियो को मीठा पानी दे प्यास बुझायें
अपने को विलीन कर स्वय को मिटाए
ताकि उसकी संपत्ति जग के हित काम आए
और तभी सारा जग सदा सर्वदा मेघ के लिये
रहता है आँख बिछाए। ★

卐 आकाश से बरसते पानी व ओलो से बचने के लिए
आकाश पर चंदोबा ताना नही जाता
पर स्वयं के ऊपर ही लगाया जाता है छाता
धरती की नुकीली चुभने वाली शूलो से बचने के लिए
धरती पर चद्दर बिछाया नही जाता
पर स्वय के पैरो को व्यक्ति जूता पहनाता
दूसरो के हमले कब रुके भला है ?
लाख बार कह दें कर ले पुकार
साहस व शक्ति जुटाले स्वयं स्वस्थ बनकर
तो स्वतः हो जायगा उनका हमला बेकार ★

卐 जीवन मे होश रहे, यह कोई प्रक्रिया नही है
किसी अन्य कार्य की प्रतियोगी, प्रतिक्रिया नही है ।
साथ साथ रहे चेतना और मन
ध्यान इसका प्रत्येक कार्य मे रख कर भरे नवजीवन
केन्द्रित रहे ध्यान, करें क्रीड़ा वत् अभ्यास
चेष्टा न करनी पडे करना न पडे प्रयास
तभी सब कुछ रहेगा ताजा और नवीन
मन में रस फुटकर देता आकर्षण प्रवीन ★

卐 बाहर के जगत की जिज्ञासा से पैदा होता विज्ञान
और अंतस चेतना की खोज से जागृत होता ज्ञान
सूचना व स्मृतियो के निरंतर बदलते क्रम मे
उभरता है पदार्थ विज्ञान
भाव अनुभूतियो के शाश्वत क्रम मे
निखरता स्वयं का ज्ञान
इसलिये ज्ञान का स्रोत व संचय दोनो है अथाह
और विज्ञान का रुककर चलता बदलता प्रवाह । ★

卐 तृष्णा है परिधि जिसका केन्द्र है लोभ
परिधि सफल हुई तो मोह हो गया
और असफल हुई तो उत्पन्न हो गया क्षोभ। ★

卐 जानता मैं विषय सभी विश्व के
दर्शन साहित्य, कला विज्ञान
मैंने इन पर दिये बहुत ही व्याख्या
पर मैं हो गया मौन
जब किसी ने धीरे से मुझे पूछा
"आप स्वय है कौन ?" ★

卐 पूछा, "गुरुवर से क्या तीर्थ का रास्ता यही ?"
"पीछे चले आओ मार्ग मिल जायेगा सही"
वर्षो चलता रहा उनके पीछे दिन रात
तब यकायक रोष मे भर कर गुरुवर बोले
"सही रास्ते तुमने मुझे पहुचाया ही नही ।" ★

卐 स्वच्छ निर्मल तन मन लिये
हरिजन ने किया मंदिर मे प्रवेश
अंदर बैठे काले कलूटे मैले कुचैले वेषधारी
पुजारी का चेहरा तमतमा उठा छा गया आवेश
वह चिल्ला उठा "चंडाल ! रहना द्वार से दूर
अंदर आ गया तो कर दूगाँ हड्डी पसली चूर"
दर्शनार्थी लोटता हुआ सोच रहा था
साफ सुथरे तन मन का मैं कैसे हूँ अछूत ?
और दर्शन मे बाधक क्रोधी पुजारी कैसे हो गया देवदूत
चरित्र और व्यवहार का जब जग पूछेगा हाल
तो प्रकट हो जायगा कौन देवदूत कौन चंडाल ★

卐 आँख खोल कर देखा तो
हर चेहरे मे देख सका मेरी ही परछाई
और कान खोल कर सुना तो
हर स्वर मे मेरी ही आवाज आई
इसलिये तो कहता हूँ
कि जब तेरा मेरा मिट चुका
तो मेरे मे स्वयं प्रकट हो गई प्रभुताई। ★

卐 सत्य की खोज में यथार्थ निखर जायगा
स्वप्नो का संसार सारा निखर जायगा
उसी मे प्रकट होगा महान सुख या दुख
जिसमे नंगा होकर व्यक्ति दिल से नाच जायगा
या फिर मायूस बन कर
फाँसी का फंदा ही खायगा। ★

卐 मैंने बहुत सारे धर्म ग्रंथ छान डाले
कंठस्थ कर लिये गीता वेद पुराण
और इसे मैंने स्वाध्याय लिया मान
पर मैंने कौन, कहाँ से क्यो आया ?
इसको जानने का कभी किया न प्रयास
और स्व को और गति बढी नही तो रुक गया विकास
स्व का जिन्होने अध्ययन किया, हो स्वयं मैं लीन
उसी तपस्या से हो गई आत्मा स्वाधीन ★

卐 विश्व की लबालब भरी झील मे
सृष्टा ने मुझे कंकड बना कर फैका, लगा जोर
हलचल मची लहरें उठी, मच गया शोर
मैं गहरे मे उतर कर सिमट गया
तो सारा विध्न ही मिट गया
और शांति छा गई सभी ओर ★

卐 जिस क्षण विषय से बदल कर विषयी पर जायगा ध्यान
मेरा जगत मे ही हूँ और सारे कारण
भीतर है इसको हम लेंगे जान
सुख-दुख प्रीति घृणा मान और अपमान
अंदर ले जाकर उनसे करले पहचान
अंदर बसे शत्रु का पता चल जायगा
उसी क्षण परम मित्र मे वही बदल जायगा। ★

卐 जिसने कभी न की सुरक्षा की चाह
ओर अपने प्रति जो रहा बेपरवाह
एकाकी होकर खोज ली उसने अपनी राह
और शून्य बनकर पा लिया जीवन अथाह
और जिसने अपने सुरक्षा हेतु लगाया पहरा
उसकी चेतना हो गई मौन और प्राण हो गया बहरा
जग कर अभय बन, जो आगे न चला
मौत को छाया मे वह प्रतिक्षण पला। ★

卐 स्वच्छ, विशाल निर्मल जल का हौज होता
बहुत ही सुन्दर
पर उससे अधिक मैं चाहता हूँ छोटा सा गहरा
पानी का कुंवा पृथ्वी के अन्दर
क्योकि वह युग युग तक विपुल जल बांटकर
भी कभी न होगा खाली
सागर या धरती के स्रोत करते है उसके
धन की रखवाली
जबकि हौज का पानी है कही से मागा हुआ उधार
और रीता होने पर उसमे स्वय ही फूट
नही सकती जल की धार
इसी तरह अंतकरण से जगे ज्ञान का खजाना है अक्षय
और पंडित या विद्वान के संग्रहित विचारो का
निश्चित है क्षय। ✶

卐 मेघ की अमृतमय बूंदो से धरती का कण कण मुस्कराता
अंकुरो से फूट कर हर पौधा झूम झूम लहराता
पर उसी से जवास का पौधा जलकर राख बन जाता
पारस के स्पर्श से लोह बन जाता है स्वर्ण
पर लकडी का डंडा साथ रहने पर भी
नही बदलता है वर्ण
तरुवर से छाया शीतलता और फल मिलते है
पर बबूल पर तो केवल कांटे ही कांटे खिलते है
ईर्ष्या हो, हठ हो, या कर्कश नुकीले भाव
सत्पुरुप भी बदल नही सकते उनके स्वभाव। ✶

卐 घृणा का मृत शरीर
जिससे आ रही बदबू जहाँ छा रही व्याधि
हममे से बहुत सारे अनचाहे भी
उसके लिये बन जाते कब्र और समाधि। ★

卐 गति और स्थिति दोनो ही है एक सत्य का नाम
काम करने का रहस्य है केवल विश्राम
काले धरातल पर ही उभरती है शुभ्र रेखा
बिना अन्धकार के कब किसने प्रकाश है देखा
मरण का प्रारम्भ जन्म तो जन्म का अन्त है मरण
जन्म और मृत्यु का संयोग ही करता जीवन वरण
ऊँचे वृक्षो की गहरी जडो को झेलता भूतल
वर्तमान की जड है भूत तो भविष्य है फल
आदि से अन्त तक जीवन है एक प्रवाह
विपरीत सम्भावनाओ का योग जिसमे छिपा अथाह। ★

卐 माता पिता और पुरखो से हमको मिला वैभव और धन
परम्पराओ से बंधा जीवन
निश्चित कर गये वे हमारे सारे ही कर्म
नियम मर्यादा विचार और धर्म
हम जैन बौद्ध हिन्दू ईसाई पारसी मुसलमान
जन्म से ही है हमारी इनसे पहचान
कभी हमने अपने धर्म को खोजने या जानने
का किया नही प्रयास
जिसमे कि हमारे शक्ति और सामर्थ्य का हो सके विकास
खरा खोटा जो मार्ग मिल गया उसी पर चल रहे है
और धर्म कर्म नियम जो भी मिल गये उसी मे पल रहे है ।★

卐 जिसने अमावस्या की रात मे किया विद्युत प्रकाश
पवन और मेघो को नियन्त्रित कर वर्षा की बधाई आस
पंक्षियो की तरह आकाश मे भरली उडान
चन्द्रलोक पर उतर गया धरती का इन्सान
उभरती नदियो का बाँध दिया जल
सारे जग को नियन्त्रित कर मानव बन गया सबल
वही जाति धर्म राष्ट्र भाषा के बन्धनो मे फँस रहा हर बार
और शक्ति खपा रहा उन्हे मजबूत बनाने मे बेकार । ★

卐 चट्टानो से निकल कर निर्झर उन्हे देता है छोड
धीरे धीरे बहकर विशाल जल राशि से देता नाता तोड
सतत और धीरे चलने वाले भी बिना अवरोध
समग्रता मे मिल जाते है पाकर के बोध । ★

卐 पानी को बाँधा तो वह भाप बनकर ऊपर उठ गया
तभी भाप को मेघ ने अपने गर्भ मे समा लिया
मेघ का हृदय चीरकर पानी धरती पर बरसा
तो पृथ्वी के कण कण ने उसको अपने मे रमा लिया
और बाध बनाकर मानव ने फिर उसे जमा किया
पानी की लहरों ने दीवारो से टकराकर व उछलकर
करी करुणा की पुकार
तो पास खडे दर्शक ने कहा
तरल प्रकृति के आसानी से किसी और बहने वालो पर
नियन्त्रण करना तो सदा ही रहा दुनिया का व्यवहार ★

卐 बरसात अभी हुई नही पर किसान
खेत की जमीन को खोद कर कर रहा तैयार
क्योकि सख्त जमीन मे बोया हुआ
बीज कभी पनप नही सकता
न कभी हो सकता उसका विस्तार।★

卐 जीवन मे मैंने तो कभी देखी न हार
न मार खाई न किया प्रहार
क्योकि विजेता बनने की कभी रही न चाह
सत्ता अर्थ वैभव की कभी की न परवाह
जीतने के योग्य मुझे कुछ लगा ही नही
इसलिये मुझे संघर्ष करना पडा ही नही
मैं तटस्थ खडा रहकर देखता रहा संसार
और इसी मे मिल गया मुझे आनन्द और प्यार
मेरे मन में कभी घुस ही नही पाया संसार
इसलिये मैंने न विजय पाई न हार। ★

卐 किसी मन्दिर मस्जिद गिरजे के भीतर
या किसी सन्त महात्मा के पास
हम सत्य खोजने जायें तो होंगे निराश
क्योंकि सत्य यदि वहाँ है तो अवश्य होगा
अपना घर भी उसका आवास
जैसे सुखद समीर व उज्जवल प्रकाश का
अस्तित्व है तो है सभी जगह उसका निवास।★

卐 मैं यह तो नही मानता कि तुम्हारे सारे तर्क निस्सार
और यह मानता हूँ कि तुम जो मुझे समझा रहे हो
वह भी हो सकता है सच
पर उसमें भी कुछ सत्य तो अवश्य ही जायगा बच
क्याकि परमात्मा के सिवाय हम सभी है अपूर्ण
और इसलिये तुम्हारे तर्क भी हो सकते नही पूर्ण
अनंत और बिस्तीर्ण सत्य को छू लेना है नही आसान
और इसलिये जो सत्य तुमने पाया उसे पूरा
न लेना मान। ★

卐 महत्वाकाक्षा के विष ने युगो से
हमारे जीवन में प्रवेश कर किया उसका नाश
स्वार्थ शोषण संघर्ष से भरा
आदि से अन्त तक उसका इतिहास
पर छोड कर संकल्प
जिस दिन किया समर्पण स्वीकार
उसी क्षण मृत्यंजय बन गया जीवन
प्रवाहित हो गई उसमे अमृत की धार।★

卐 लौ ने तेल जलाकर, जलादी बाती
फिर स्वयं जलकर पा गई शून्य मे विस्तार
व्यक्ति ने प्रमाद छोड़ा, छोड़े विचार
फिर स्वयं को छोड़कर हो गया जगत के पार
विचार और अहंकार के जब तक चलते थे भँवर
चेतना भटक कर निरन्तर खा रही चक्कर
और निर्विचार निरहंकार हुआ कि शान्त हो गया मन
केवल रह गई चेतना मुखरित हो उठा जीवन। ★

卐 जहाँ विचार समाप्त होते है प्रारम्भ होता ज्ञान
क्योकि विषय विकारो का जहाँ रहता है वास
धन सम्पत्ति वैभव की तृष्णा और आश
वही विचार और विकार का चलता है प्रवाह
पर जबसे मैंने छोडी इन सबकी चाह
मन निरपेक्ष होकर बन गया बेपरवाह
तो प्रकट हुआ केवल ज्ञान, मैं बन गया भगवान। ★

卐 कर्तव्य किया न रखी फल की आश
सुख मे प्रसन्नता हुई न हुआ दुख मे निराश
तन के कष्टो का चैतन्य पर हुआ न असर
हर स्थिति मे स्वस्थ हो किया अपने मे बसर
कर्मों मे अनासक्त बन बढ गये चरण
प्रभुता स्वयं उसका करती वरण
इसे जग कहता हो गया कल्याण,
और मैं कहता उसे हो गया निर्वाण। ★

卐 इच्छाओ को जो निरन्तर जन्म देता है
और फल की आकाक्षा करता है
वहाँ चलता है समय का प्रवाह
और व जहाँ समर्पण भाव जागृत होकर
हर वस्तु को स्वीकारा जाता है
वहाँ समय को गति रुक जाती है
और प्रकट हो जाता है केवल आनन्द अथाह। ★

卐 दूसरो मे वही आनन्द ढूँढता है जो
पाता है अपने मे अभाव
और दूसरो मे खोजना ही पैदा करता है हिंसा के भाव
और इस खोज की गहरी खाई मे नीचा
वहता हिंसा का बहाव
जो भाव को विभाव बनाकर करता विस्फोट
पर जहाँ दूसरा मिटा कि विभाव ही बन गया स्वभाव
भाप बनकर ऊँचाइयो मे उसने ले ली ओट
तब दिया अहिंसा भगवती ने अमृत का घट
जीवन वीणा का मधुर गान हो गया प्रकट। ★

卐 वर्षों की उत्कट साधना में गुरु रहते थे तल्लीन
सेवा में रहता था नवदीक्षित शिष्य एक प्रवीन
एक दिन देवदूत ने आकर कहा
तीन जन्म मे होगा गुरु आपका कल्याण
हो गए निराशा, मान ली हार कि बुझ गये अरमान
शिष्य को बताया तीन बरगद के पत्तो जितने जन्म
मे हो जायगा तुम्हारे कर्मो का अन्त
वह नाच उठा धरप्पार, और विजय के विश्वास में
खुल गया उस के मोक्ष का द्वार। ✶

卐 पुष्प खिले, रस फूटा, पत्ते लहराये फैली बहार
भ्रमर डोले तितलियें मंडराई
कोमलांगियो ने संजाये शृंगार
पर ज्योहि सुमन मुरझाए, सूख गया रस
तिल्ली, भ्रमर, दर्शको ने किया किनारा खा कर तरस
पुरुष और प्रकृति ने पुष्प से नाता दिया तोड़
संपत्ति के साथी जाते विपत्ति मे छोड। ✶

卐 आँखो मे सुरमा डालते ही
आँसू बरस पडे तडातड
और मन मे विराग छाते ही
छूट जाती स्वयंजग की जकड। ★

卐 त्याग का त्याग ही तो है त्याग
पर त्याग का अभिमान बन जाता राग
इसलिये त्याग को याद रखने वाला भी
कभी न सकेगा जाग। ★

卐 सारे महापुरुष ज्योति प्रकट कर दिखा गए प्रकाश
ज्योति बुझने पर रह गई लीक और सुवास
हम बुझे ज्योति को मानते भगवान
उसी की पूजा कर दे रहे सम्मान
पर सच तो यह है वहा केवल अन्धेरा पाएँगे
जडता की चट्टान से ठोकर ही खाएँगे
ज्योति के अनुभव से जो ज्योति जगाएगा
उसी क्षण व्यक्ति स्वयं प्रभु बन जाएगा । ★

卐 महापुरुषो के बताए मार्गों से लक्ष्य की ओर
बढने वालो को समझें अन्वेषको का मिलन स्थल
जिसका आधार हो प्रेम और आनन्द ही फल
पर यदि मार्ग की पूजा की देकर श्रद्धा सत्कार
और प्रेरणा व जिज्ञासा पाकर यात्रा को हुए न तैयार
तो हम चौराहो पर ही अटक जाएगें
मार्ग मिलेगा न मँजिल, बीच मे ही भटक जाएगें । ★

卐 काम एक शक्ति है जिसमें अपूर्व वेग और असीम वल
उसे खंडित करने या दवाने का प्रयास
सदा ही रहता है निष्फल
दूसरों को पराजित करने को कहा यदि हिंसा
तो अपने को सताना कैसे होगी अहिंसा
संघर्ष और जय पराजय के भाव
स्वयं हो या पराया, निश्चित छोड़ेंगे घाव
तटस्थ वनकर काम को करलें स्वीकार
और जागृत करें स्वभाव
अजेय वना देगा उर्ध्वमुखी काम का बहाव। ☆

卐 धन कभी नहीं भर सकता आत्मा का खालीपन
हम धन का वाधते हैं और धन वांध लेता है मन
सारे विश्व का धन भी भर न सकेगा समग्र जीवन
यह समझ लिया और दूर हो गया उससे लगाव
मूर्च्छा हटी कि जागा निस्पृहता का भाव
फिर धन छोडें या न छोडें वह स्वयं कर लेगा किनारा
विखर जायगा वैभव होकर वेसहारा
स्वमिट कर वन जागया सर्वस्व
मुखरित हो जायगा उसमें चेतना का वर्चस्व। ★

卐 भवन नही है वार, छज्जा, अटारी, मीनार
क्योकि उसमें होता नही आवास
रहने को चाहिये शून्य अवकाश
दरवाजे से प्रवेश होता जहाँ कुछ भी नही
अतः खाली मे होता प्रवेश व पाते निवास
और वही है केवल काम का भवन
इच्छाओ से रहित स्थान मे बसता जीवन। ★

卐 मैं बैठा देख रहा था बेडमिटन का खेल
जिसमे बल्ले की मार से शटल हो रही थी बेहाल
तो लगा भावो के झपाटे से चेतना
की बिगड जाती चाल
वरना स्वयं मे शटल है हल्की, श्वेत, सुन्दर
और भाव शून्य चेतना है प्रभो का स्वच्छ मन्दिर। ★

卐 उत्साह रहे पर, सावधान
आप तेजी से आगे बढें पर लहराऐं नही
किसी से टकराऐं नही, स्वय चोट खायें नही
बन जाय न कभी अनियन्त्रित यह मन
और गन्तव्य पर जाकर विहंस उठे जीवन। ★

卐 संसार असार दुखमय नाशवान
ऐसा मानकर इससे जो जाता है भाग
वह साधु पाल रहा है निपट अज्ञान
पर जिसने सचमुच ही किया त्याग
इसलिये कि एकान्त मे निर्विन्विरूप से
संसार का सम्पूर्ण आनन्द ले सकें
वही प्रभु बन सकता है महा भाग। ★

卐 दमन पूर्वक त्याग और स्वच्छेद भोग
दोनो को मैं तो मानता हूँ रोग
एक ने अपनी इच्छाओ को अपने मे दबाया
दूसरे ने निकालने का साधन खोजा पराया
दोनो से श्रेयकर है जागरण
जिसमे इच्छाऐं विसर्जित होकर होती शून्य मे विलीन
और रहती नही अपने या पराए अधीन। ★

卐 इस द्वार के पीछे बराबर वाले कमरे मे
ताला बन्द जडा हुआ स्वर्ग का द्वार
पहले सोचा मैंने कुजी खोदी
पर बाद मे ध्यान आया कि
कुजी तो मेने स्वयं फेंक दी उस पार। ★

卐 घर कहता मुझको मत छोडो
तेरा अतीत का यही वास
और मार्ग पुकार का बँधा रहा आश
कहता पीछे चलते रहो
मैं हूँ तेरा उज्जवल इतिहास
पर मैं न तो अतीत मे और न भविष्य मे
केवल हूँ वर्तमान क्षणो की साँस। ★

卐 हम सब भिक्षा का पात्र लेकर ही
मन्दिर पर जाते प्रभो के द्वार
और पूजा की सामग्री के साथ
लग जाता हमारी याचनाओ का अम्बार
कोई चाहता स्वच्छ तन, कोई वैभव सम्पदा वंधन
कोई भरना चाहता मन कोई सुखी चाहता जीवन
भिखारी को कब कोई दे सका सम्मान
इसलिये हम को खाली हाथ आना पड़ता
नही मिल पाते भगवान्। ★

卐 मेरे दिव्य प्रसाद की खिडकी के नीचे
सडक के दाहिनी ओर सिमट कर साध्वी जाती थी
और बाईं ओर पसर कर जा रही वेश्या मदमाती थी
तो मैंने सोचा।
कितना पवित्र वंदनीय साध्वी का जीवन
और कितना घृणित अपावन वेश्या का तन
तभी मेरा अन्तहृदय बोल उठा
एक प्रभो को खोज रही है करके याचना
दूसरी है खोजती सह करके यातना
एक पूज्यनीय दूसरी दयनीय
पर दोनो की आत्मा है एक सी ही कमनीय। ★

卐 एकाकी द्वीप पर कुछ सन्यासी खुले
आकाश के नीचे रह कर
कहते थे प्रभू हम जी रहे तेरी दया पर
एक दिन शहर से विद्वान धर्माचार्य आए
उन्हे सुन्दर सरस संगीत भरे भजन सुनाए
जब वह वापस जा रहा था शहर
तो देखा वे ही सन्यासी आ रहे उडकर
आकर पडे पैर मे कहा "भूल गए भजन फिर सुनाओ"
धर्माचार्य ने चकित हो उनकी उपलब्धि पर
कहा "तुम तो पुरानी प्रार्थना ही गाओ।" ★

卐 छैनी और हथोडी लेकर पत्थर तराश रहा था मूर्तिकार
मैंने पूछा "आप नया तो कुछ भी नही करते तैयार
फिर मूर्ति बनेगी कैसे ?
तो वह हँस कर बोला "मूर्ति बनाई नही जाती
वह तो छिपी हुई है पत्थर के अन्दर
व्यर्थ का पत्थर तोड कर अनावृत किया
कि प्रकट हो जायेगी प्रतिमा सलोनी सुन्दर"
और इसी तरह चेतन के ऊपर की परतें उतर जाती हैं
तो प्रकट हो जाता स्वयं भगवान
सुवासित जिससे हो रहा है मन मन्दिर। ★

卐 एक धर्माचार्य ने सडक पर झाड़ू फेरते हरिजन से कहा
"कितना गन्दा और घृणित है तुम्हारा काम
कर्मों की विचित्र लीला कैसी हाय राम"
हरिजन ने पूछा क्या करते हैं आप ?
गर्वित गुरु बोले "मैं बाटता हूँ पुण्य और छांटता हूँ पाप"
हरिजन ने फिर झाड़ू फेरते मुस्करा कर कहा
"हाय राम भले मनुष्य को क्यो कर दिया बेकाम ?" ★

卐 हमने महात्माजी के दर्शन किए तो उन्होने कहा
"लाखो की सम्पदा का किया उन्होने त्याग
घर बार परिवार पुत्र पुत्री छोड हो गये बेलाग"
पूछा "कब हुआ ? तो कहा हो गये पचास साल"
आश्चर्य हुआ कि निस्सार धूल समझ छोडा
उसका कैसे रहता है निरन्तर ख्याल
त्याग मे और भोग मे वैभव का मोह तो छूटा ही नही
आत्मा का आनन्द फूटे कहाँ से अहं का पाषाण
तो टूटा ही नही। ★

卐 एक कट्टर पथी उपदेशक
छिछले हृदय का है निपट बहरा
जो दूसरो के विचार सुन नही सकता
न उतार सकता गहरा। ★

卐 अपने तक सीमित रखना संतोष की बात
प्रकृति सुन न ले उसे, जो जगती दिन रात
क्योकि उसने सुन कर मान लिया
तो सरिता सागर तक जायगी नही
शीत ऋतु से बसंत फिर आयगी नही
चलते सासो की गति रुक गई
तो जीवन मे चेतना लहरायगी नही। ★

卐 संसार का आनन्द चाहते हो
या परलोक की शांति ?
प्रश्न पूछा गया जब लेकर मेरा नाम
तो मैंने कहा मुझे है दोनो से काम
क्योकि एक है महा प्रभू के काव्य का अनुप्रास अलंकार
और दूसरा है उसका पूर्ण विराम। ★

卐 मुझे तो सशय है आप बुद्धिमान् हो
क्योकि बुद्धि का अहं आपको रोने नही देता
बुद्धि का सग्रह आपको सोने नही देता
बुद्धि का भ्रम कुछ होने नही देता
उसके गाभीर्य मे हँसना गँवाया
स्वार्थी बन कर किसी का प्यार नही पाया
मेरा तो विश्वास है आप किसी नशे मे बेभान हो। ★

卐 क्रोध करके किया हमने पश्चाताप
उससे तो बच गये पर मिटा नही अन्दर का अनुताप
अपनी प्रतिमा को उज्जवल करने में हो गये सफल
पर किंचित न सका उससे अपना हृदय बदल
अन्तर्मन को रुपान्तिरत करने मे है प्रायश्चितकासार
पश्चाताप तो केवल बाहर की प्रतिमा देता सवार। ★

卐 समय की बहती धारा को हम रोकना चाहते है
जीवन के क्रम को स्थगित कर हम टोकना चाहते है
रोकने और टोकने मे खपा देते है हम अपना बल
और मृत्यु के समय पाते है कि हम हो गये असफल
क्रोध करें आज, ध्यान करें कल
धर्म को स्थगित कर रहे, अधर्म मे पल
जीवन गँवाया, सारा कल की चाह मे
मिट गये सारे काल के प्रवाह मे। ★

卐 मैं स्वय ही हूँ चिनगारी
और स्वयं घास फूस का ढेर
मेरा ही एक भाग दूसरे को
जला देगा देर सवेर
मैं स्वय ही हूँ यात्री स्वयं माझी बलवान
हर रोज लेता मैं खोज
नया प्रदेश अपनी आत्मा को छान
मेरा एक हृदय दूसरे के दुख से
घायल होकर कर रहा रक्त पान
और दूसरा हृदय उससे द्रवित होकर
दे रहा क्षमादान
चेतन की साधना का बन रहा तन द्वार
तन मिटकर चेतना हो जायगी साकार। ★

卐 अपने को जानने का सीधा मार्ग है उसका ध्यान
जिसमे कुछ भी करना नही पडता
केवल करनी होती है शून्य से पहचान
शून्य हो जाय अंह शून्य हो विचार
समय शून्य होते ही प्रकट हो जाता चेतन निराकार। ★

卐 जब मैंने अपने से ही पूछा 'मैं कौन'
तो उत्तर मिला कि मैं न तो हूँ सुन्दर तन
न कुशाग्र बुद्धि और न चचल मन
कार्यरत इन्द्रियो में भी कुछ नही है मेरा
तभी टूट गया सब आवरणो का घेरा
तन के भीतर बुद्धि हो गई स्थिर मन हो गया मौन
मैं मिट गया तब उत्तर मिल गया 'मैं कौन'। ★

卐 हजारो लाखो व्यक्ति है तेरे अधीन
पर तुमसा दिखा न गुलाम और दीन
क्योकि उनके बिना स्वामी कहेगा कोन
और यदि तुम किसी के अधीन हो
तो तुम्हारा व्यक्तित्व रुक कर हो गया है मौन
न अधीन हुये न किया किसी को अधीन
एकाकी बन वही नर हो गया प्रभू मे लीन। ★

卐 मन मे भरे रहते विचार कर्म अनुभव संस्कार
अतीत से उसका जुडा रहता तार
योनि की परिधियो है उसके खेल
बाह्य कामनाओ से रखती जो मेल
और जब व्यक्ति मन और तन को कर लेता पार
अंतर में छिपे का पा लेता सार
बन जाता सिद्ध बुद्ध, मिट जाता संसार ★

卐 मन विचारो का पुलिंदा है, है संकल्प विकल्पों का जाल
जो मारने से मरता नही और दबाने से दबता नही
पर उससे जब दूर होकर देखने लगा
तो वह शात हो गया और उसकी रुक गई चाल
होश नही था तब तक तो करता था उपद्रव और रोष
पर होश मे आते ही हो गया चेतन में तल्लीन
शात बन गया और हो गया ब्रह्मलीन। ✶

卐 जब तक यह जाना कि सुख और दुख
औरो से मिलता है
तब तक हम सदा रहे परतंत्र और दीन
पर जब यह जाना कि सुख भी मेरा दुख भी मेरा
उसी क्षण व्यक्तित्व हो गया स्वामी स्वाधीन
सब कुछ पीछे से भीतर से आकर, बाहर पा रहा विस्तार
इस नाटक के लेखक, पात्र दर्शक हम रहे सदा से
यह जान लिया तो अनंत शून्य पर हो गया
चेतना का अधिकार। ✶

卐 अविरल वर्षा की धार से चोटियें तो रह जाती रीती
और घाटियों तर होकर जाती भर
घट में समाएगा उतना
जितना खाली है उसका उदर
इसी तरह कामना रहित होगा मन का जितना अवकाश
गहन चेतना व्यापक बनकर करेगी वही पर निवास। ★

卐 अर्थ, सत्ता, यश, वैभव के चाह की
को जिसने अपेक्षा तो दुख ही पाया
और जो इनसे रहा बेपरवाह
और की उपेक्षा तो आनन्द हाथ आया
चाह करने पर कभी कुछ मिलता ही नही
अनचाहे सभी कुछ खिलता सही
सुख दुख की सीमा का चिन्ह भी यही। ★

卐 अंतप्रेरणा और सौन्दर्य के गीत कही गाये
घनी बस्ती हो या एकांकी स्थान
सुनने वाले मिल ही जायेगें देकर स्नेह व सम्मान
क्योकि ऐसे गीत केवल गाये ही जाते है
और उन पर झूम उठता है जन जन
उनकी व्याख्या की ही नही जा सकती
जिस पर करते हैं केवल चिंतक मनन। ★

卐 असत्य को मनाने के लिये
तर्क का सहारा लेकर निश्चित भाषा को कहा प्रमाण
आग्रह भरे शब्दों में आबद्ध कर दिया ज्ञान
पर सत्य सदा रहा अप्रतिबद्ध और अनन्त
अनिश्चय की भाषा है उसका आदि और अन्त
हर वस्तु किसी अपेक्षा से है और किसी से नही
सत्य की खोज का है यह रास्ता सही। ★

卐 सन्यास है जीने की कला और पूर्णता का अनुभव
जिसमे स्वत· हो जाता प्रेम का उद्भव
सन्यासी को छोडना नही पडता घर बार परिवार
क्योकि उसके लिये अमृतमय है सारा संसार
वह तो स्वनिर्भर होकर चल पडता है अभय की राह
मौत भी बन जाती है जब जीवन की चाह
जीवन के सुन्दर तय अध्याय का हो जाय मौत
पूर्ण विराम
सन्यास का केवल यही है काम । ✶

卐 समाज अतीत सुविधा और औपचारिकता
पर ध्यान रख कर करता नीति निर्माण
वहाँ हमारे चरित्र की धारणाये बन जाती प्रधान
उसी को उपदेश देने वाले को लेते हम सद्गुरु मान
पर सच्चा सद्गुरु धारणाओ को तोडकर पहुँचाता उनके पार
सामायिक सत्यो का छोड़कर
सनातव मत्य से जोड लेता तार
और ऐसे सद्गुरु से हम रहते अनजान
जीवन बीत जाता मिलता नही समाधान । ✶

卐 आया था अनाम और जाऊंगा अनाम
विचित्र संयोग था कि बिना पूछे किसी
ने दे दिया मेरा नाम
और उसी को लेकर मैंने अपने सारे किये काम
संचलित हुई उसी से मेरी प्रवृतियो तमाम
में जो था ही नही उसे मैंने समझ लिया अपना
और उसे फिर छोड़ना पडा जैसे रात का सपना
अपने को मै कभी जान ही नही पाया
और जो न था, उसी मे, अपने को गँवाया। ★

卐 हर पूजा और उपसाना गृह के अन्दर
पाते हम प्रभो के रजकण सुन्दर
और बाहर आकर उन्ही पर लडते झगडते
आपस मे करके ईष्या और रोष
तब प्रभो के रजकण वापस लौट जाते
तो इससे हमारा अपना ही है दोष। ★

卐 भलाई और बुराई के बीच की सीमा
को जिसने लिया जान
और दोनों को अलग करने की रेखा पर
अगंली रख सकता जो इन्सान
उसे ही मिल सकते है परम दयालु भगवान ★

卐 जो व्यक्ति मूर्च्छा को त्याग
सदा सर्वदा जगता रहता है
अवरुद्ध न होकर, रहता गतिमान
अपेक्षा छोड़ उपेक्षा पर रखता है ध्यान
विवेक और साहस से जिसको चरण चला
निश्चित ही उसे अपनी मंजिल मिला। ★

卐 संकल्प की साधना में 'तू' खो गया
समर्पण की साधना में 'मैं' सो गया
तू में में व मै मे तू स्वयं हो गये लीन
परम शून्य या परम मुक्ति के विपरीत मार्गों से
पहुँच कर दोनो हो गये स्वाधीन। ★

卐 सूर्योदय के साथ जीवन पाता विस्तार
संध्या मे सिमट जाती जीवन की धार
एक प्रेरणा काम की और दूसरा विश्राम
तन के विश्राम मे जाग जाता काम
मन के विश्राम मे प्रगट होता राम
और मुक्ति है काम से राम की प्रक्रिया तमाम। ★

卐 धर्म और मृत्यु एक ही प्रक्रिया के हैं दो नाम
जिसने मृत्यु का अनुभव नही किया
वहा तक रहता केवल अर्थ और काम
और उसका प्रत्यक्ष अनुभव करते ही
उत्पन्न हो जाता धर्म जिसका मुक्ति है धाम ★

卐 मृत्यु के चेतन बनते ही जन्मता धर्म तदर्थ
वह निश्चित है, यह जाना कि बदला जीवन का अर्थ
उसकी दृष्टि मे जीवन की सारी क्षुद्रताए लगती है व्यर्थ
चरण ठिठक जाते रुक जाता सारा ही अनर्थ। ★

卐 मरते समय पीड़ा और दुख के दर्द भरे घाव
की सृजक मौत नही है, पर है भविष्य
समाप्त होने का भाव
जीवन की लालसा का भविष्य है आधार
स्थगन की प्रक्रिया मे, जन्मता पाप, पलता संसार
जीवेष्णा समाप्त हुई कि मिट गया विषाद
पूर्ण तृप्ति मे तन मन डूब कर पा गये आलहाद
उसी क्षण मौत मे उभर आता विहँसता जीवन
उल्लसित हो उठता जिसमें चेतना का कण कण । ★

卐 धर्म सीधा सरल रास्ता है
सहज आनन्द का जहाँ खुल जाता है द्वार
मिट जाता अहंकार
मोह माया का सूख जाता रस
प्रज्ञा से प्लावित जीवन बन जाता मधुर और सरस
तभी धर्म को घेरे लेते है कर्म
लोकेषणा मे रस लेने को आतुर धर्म बन जाते अधर्म
और अधर्म मे खो जाती आत्मा अमूल्य
बाहर पाने मे भीतर का सोने का देना पड़ता मूल्य । ★

卐 शक्ति और सामर्थी सदा रहते तटस्थ
उसका अपना है न कोई हेतु न कोई गति
व्यक्ति ने उसको दूसरे की ओर गति देकर
नीचे बहाया तो बन गया मौन
और स्वयं की तरफ गति देकर उपर उठाया
तो सारा उपद्रव हो गया मौन
पानी बर्फ बनकर ठस गया सिमट गया आकार
भाप बनकर चढ गया पा लिया विस्तार
अधर्म है बाहर को और उर्जा बहाव
धर्म है अन्तर मे झाकने का व्यक्तिगत स्वभाव । ★

卐 चारो ओर था अज्ञान का अन्धकार
क्रोध मान मायालोभ कर रहे थे प्रहार
रागद्वेष की जंजीरो मे बंधा
आसक्ति के दल दल मे फँसा
वासना के अजगर कर रहे थे फुफकार
तभी मैने जागृत हो अन्दर झाका बनकर अविचल
कि अचानक सारी ही परिस्थितिया गई बदल
असंगता और अभय का मिल गया वरदान
एक ही क्षण मे हो मै गया भगवान् ★

卐 आत्मा और परमात्मा के बारे में सब कुछ लिया जान
तो भी मिला नही समाधान
क्योकि ये वस्तुए जानने की नही होने की है
अपने मे रमण करे उसके सारे विभाव खोने की है
अपना समझा वो था पदार्थ पराया
उसे खोया तो सभी कुछ पाया
ज्ञान विज्ञान के सग्रह को जिसने मिटाया
वही बन गया प्रभु जिसने स्वयं को जगाया । ★

卐 अन्धकार ने भगवान् से कहा
सूर्य मेरा अन्नत काल से कर रहा सर्वनाश
छुटकारा दिला दो प्रभो आया ले न्याय की आश
तभी भगवान् ने सूर्य को बुलाया
व उपालय देकर कहा गलत है यह बात
सूर्य ने कहा प्रभो अन्धेरा मुझे दिखादें साक्षात
प्रभो ने अन्धकार को उसके सामने बार बार बुलाया
पर वह कभी नही आया
युगो युगो का अन्धकार मिट जाता है
जब प्रकट होती प्रकाश की किरण
और अन्नत जन्मो के विषय विकार मिट जाते हैं
जब जागृत हो जाता हमारा अन्तर्मन । ★

卐 मधुमक्खी के छेड़े गए छत्ते की भांति
विचारो के विषाक्त डकों से ग्रसित यह मन
विचार शून्य हो जाय तो झील की तरह
शांत निर्विघ्न बन जाये जीवन
दर्पण की तरह बन जाय निर्मल
और अमृत झरने लग जाय उसमे पल पल ★

卐 हमारा बडा है विचित्र व्यवहार जड़ता पाती प्यारा
चेतन खाता मार
जिसने गाया जीवन संगान उस पर छोडा तीर कमान
आत्मा की वेदना सुनने जिसने खोले कान
उस पर कीलें जड दी तान
प्रेम का पाठ पढाया उसे फाँसी पर चढाया
अहिंसा को किया साकार उसको हमने दी गोली मार
जिये जब तक किए प्रहार
और मरे तो जड़ प्रतिमा पर चढाये ढेरो उपहार। ★

卐 वैश्या और ऋषि आमने सामने रह कर
देखते थे एक दूसरे का जीवन
वैश्यों के सुखो मे लालायित रहा ऋषि का जीदन
और ऋषि के पविम्र जीवन को वेदव
नित करता वैश्या का मन
दोनो का एक साथ हुआ अवसान
वैश्या गई स्वर्ग और ऋषि ने पाया नरक स्थान
ऋषि की आत्मा झुँझला कर बोली क्या
भूल गथा भगवान ?
कि देववाणी हुई कि आत्मा और शरीर
पा रहे थे अपना फल
पवित्र आत्मा के लिये खुला स्वर्ग का द्वारा
और पवित्र तन का भूतल मे हो रहा जय जय कार। ★

卐 आप मे या तो हिलोरें खाएगी जवानी
या फिर आप रह जायेंगे केवल ज्ञानी
यौवन के आनन्द में कब मिला है जानने का अवकाश
और ज्ञानी ने ज्ञान की खोज मे छोड दी जीवन की आश
इसलिये दोनो साथ रह नही सकते
या तो छायेगी उदासी या फिर आयेगी नादानी। ★

卐 चेतन तन के संशर्ष की कल्पनाओ के सीन
उन्ही लोगो के हृदय मे बसते है
जिसकी आत्मा रुगण होकर सो रही है
और जिनका शरीर हो रहा ताल स्वर हीन । ★

卐 सुन्दरतम वस्त्र जिसने पहनाए
इष्ट मिष्ट भोजन जिसने खिलाए
प्यार भरे सलोने बिस्तर बिछाए वे सब थे पराये हाथ
फिर क्यों रहना चाहते हो एकाँकी
छोड कर ऐसा सुखद साथ । ★

卐 मेरे पास आते हैं देव और शैतान
छुटकारा पाना है उनसे आसान
पुरानी प्रार्थना पढने लग जाता हूँ
उकता कर भाग जाते स्वयं ही देव
और करने लगता पाप पुराना
तो पास से ही गुजर जाता शैतान स्वयंमेव। ★

卐 त्याग और भोग का है एक ही बिन्दू एक ही क्षण
घर और दिशा भिन्न पर श्रोत है एक ही तन
भोगी और त्यागी मे एक सीधा खड़ा एक करता शीर्षासन,
एक नारी के पीछे और एक उसके आगे रहा दौड
जागरण के बिना उसको सका न कोई छोड। ★

卐 जब से तुममे नही रहा तेरा मेरापन
तब मैंने तुम्हे सद्गुरु मानकर कर दिया समर्पण
तुमने बताया
दमन से दबी कामना, वेग से फूट कर बना लेती राह
और भोग से सदा अतृप्त रहती वासना की चाह
त्याग और भोग से परे विसर्जन मे रम जाये मन
राग और द्वेष की शृङ्खलाओं से छूट जाय तन
अनासक्ति भाव से जाग उठे कण कण
तभी प्रकट होगा मेरा जीवन धन। ★

卐 अहकार एक घटना है, वस्तु नही
उसे खडा होने के लिये चाहिए सहारा कही
चाहे पाप भरे कर्म
चाहे पुण्य भरा धर्म
स्वर्ग या नरक
वासना मिली, स्थान बना लेगा वही।★

卐 आपको यह सब कुछ कहने का अधिकार है
जिसे आपने लिया है सत्य मान
और मुझे भी यह अधिकार है
कि उसका खंडन कर
मैं तोड दूं आपके अंह की शान ✶

卐 अर्थ, सत्तावैभव, ने मूर्च्छित कर दिया मेरा चेतन
आखो पर आवरण छा गया, बुझ गया मन
मेरे मुखोटो को देख कर ही जगत ने दिया मुझे सम्मान
पर आश्चर्य तो यह है कि उन मुखोटो को
मैंने अपना समझकर
मे स्वयं को भी कभी सका न जान। ✶

卐 सोने से भरी तिजोरिया महलो में भरा धन
आज तक बना नही सका किसी का सुखी जीवन
सोने मे भय है अत' धनपतियो को नीद आती नही
खाने पीने का आनन्द मिले कहाँ से
भूख व प्यासी सताती नही
स्वस्थ जीवन दूर ही रहता उनसे
तन की व्याधियाँ दूर जाती नही
चैतन्य बुझ जाता छा जाती जडता तमाम
क्योकि उनके पास जो है उसका सौना है नाम ✶

卐 भरा पेट गा नही सकता प्रभो के मिलन
की तडक के गीत
भरा हाथ पा नही सकता वंदन अर्चन कर
प्रभो की मीत
अंहकार भरा तन बना नही सकता
जगत मे अपना कहने को मीत
वासना भरा मन मना नही सकता
अपने, अपने द्वारा अपनी ही जीत। ✶

卐 जिस पथ विचरण किया जा सके
वही अविकारी या सनातन पथ नही
और न उसी पर चलने से कोई बनता महान
क्योकि अनन्त आकाश मे राजहंस
बिना पथ के ही भर लेते है, ऊँची उडान। ✱

卐 यह आवश्यक नही कि हम जिनका स्मरण करे प्रतिफल
वे ही काल जयी पुरुष हो तमाम
क्योकि अधिक सत्य तो यह है कि
धरती और स्वर्ग का सृष्टा तो सदा ही रहा अनाम
और पदार्थ को जन्म देने वालो का रह
गया केवल नाम। ✱

卐 हमारा अपना सत् तत्व तो
सदा ही रहता है मौन
और बाहर से प्राप्त ज्ञान बोल कर
बता रहा है मैं कौन
इसलिये जो मैं कहता हूँ
उसका वहुलाश है बेकार
पर कहता रहता इसीलिये
कि अन कहा प्रकट हो जाय मन के उस पर ★

卐 चिन्ता पर लेटा हुआ था शवशात, लगा इसके
चिंता का आ गया अन्त
संतान के शादी की चिंता गई उतर
चुकाना पडेगा नही आयकर बिक्री कर
खाने कमाने का उतर गया भार,
जीने के झंझट से हो गया पार
तभी मूक स्वर से शव बोला, एक चिंता अब भी
रही है सता
सारी चिताएं करता ही क्यो आज के दिन
का यदि होता मुझे पता। ★

卐 धरती की परतो के नीचे
अन्धेरे व गर्मी की खा मार
बीच स्वयं तो मिट गया
इसी तरह जो स्वयं को मिटा देता है
गहरा उतर कर तप में निखर कर
वही बन जाता सर्वस्व
पा प्रभुता का आकार ★

卐 गहरी निर्मल नदी मे डुबकी लगाने के पूर्व
हर कोई उतार लेता अपना वसन
और परमात्मा मे लीन होने से पूर्व
अंहकार रहित करना पडता हैं तन और मन। ★

卐 त्रिकोण के तीसरे कौने पर खडे हो मैंने
अपना जीवन देखा
जो कुछ मिला उसे किया स्वीकार, जागृत
दृष्टा बन हुआ द्वंद से पार
मेरा व्यक्तित्व बन गया उडते हँस की छाया
परछाई पडी मिट गई पर कोई पकड नही पाया
शून्य व्यक्तित्व मे मैं मिट गया तो प्रभो ने
अपना आसन जमाया । ★

卐 शब्द वर्ण रूप रस के आकर्षण
का आजकल मन ही है जन्म स्थान
और उसी को बाहर फैलाकर
पराई खू टियों मे टाँग कर
उन्ही को आकर्षण हम लेते है मान । ★

卐 मस्तिष्क पर अत्यधिक विचारो के बीच को
कसने पर टूटने लगे जीवन वीणा के तार
और हृदय के भाव निसार व रीते ही गये
तो तार ढीले बनकर हो गये बेकार
तारो को अब अधिक कसा तो साज जायगा बिखर
और ढीला छोड दिया तो मंद पड जायगा स्वर
इसलिये खोये खोये से नर जीवन वीणा के तारो से बेखबर
अपना जीवन संगीत खोकर रो रहे हैं
और विषादों में अपना आनन्द खो रहे हैं। ★

卐 इन्द्रिय और चेतना के बीच है
जो संबंध बहाव, मूर्च्छा अनुराग
उसे क्षीण करने की साधना का नाम है 'रस परित्याग'
और जहा वस्तुओ का रस छूट गया
कि आत्मानन्द का श्रोतस्वतः फूट गया। ★

卐 जिसने कभी ने की सुरक्षा की चाह
और जो अपने प्रति रहा बेपरवाह
एकाकी होकर खोजली उसने अपनी राह
और शून्य बनकर पालिया जीवन अथाह
पर जिसने सुरक्षा हेतु लगाया पहरा
उसकी चेतना हो मई मौन, प्राण हो गया बहरा
जग कर अभय बन जो आगे न चला
मौत की छाया मे वह प्रतिपल चला। ★

卐 सासो के प्रवाह में निरन्तर टूटती लडी
जिनके बीच है न कोई कड़ी
न आये साँस तो आश्चर्य ही क्या है ?
मौत के झूले में पलता जीवन
चलकर टिक रहा है यह बात सचमुच है बडी। ★

卐 मनुष्य ने अभेद्य दुर्गों का किया निर्माण
भव्य भवन बनाए, सुन्दर आलीशान
निर्माता चले गये
पर सहस्रो वर्षों से भवन खड़े रह रहे हैं
और मनुष्य के नश्वरता की कहानी
सशक्त स्वरो मे कह रहे हैं। ★

卐 हृदय के मरुस्थल मे केवल एक हरियाली
जहाँ पर टिकी है मेरी श्रद्धा निराली
पहुँच नही सकता वहाँ विचारो का काफिला
रोद नही सकता, वहाँ भक्ति का बाग खिला
श्रद्धा और भक्ति के आगे तर्क हैं मौन
आनन्द अमृत उसको बता सका कौन ? ★

卐 इच्छाओ को जो निरतर जन्म देती है
और जो फल की आॅकाक्षा मे रस लेता है
वही चलता रहता है समय का प्रवाह
पर जहाँ अँह शून्य होकर
हर वस्तु का जागृत बन स्वीकार किया जाता है
वहाँ प्रकट हो जाता केवल आनन्द अथाह ★

卐 नर से नारायण बने कि उनका ज्ञान जग गया
कुछ मिला नही पर जो अपना था उसका पता लगाया
किसो ने पूछा भगवान आपने क्या किया
तो बताया कि जब तक करता रहा तब तक
हृदय मे अशान्ती रही
और शून्य बन अन्दर झाका स्वयं में
तो युग युग का गहन अन्धकार भग गया । ★

卐 मैं तो नही मानता कि मेरी मंजिल है दूर
क्योंकि उस तक पहुँचने की मेरी तडफ भरपूर
और संकल्प कर लिया तो उसको आना पडेगा
पास स्वयं आकर गोद में बिठाना पड़ेगा
साहस किया तो दूरी गई सब सिमट
एक ही छलाग भरी, लिया काम सब निपट। ★

卐 गुरु और शिक्षक मे बड़ा भारी अन्तर
शिक्षक का सम्बन्ध है बौद्धिक व्यावसायिक व अपूर्ण
और गुरु का है आत्मगत औत्यतिक पूर्ण
शिक्षक परम्परा को सेतु बनाकर स्मृति से देता ज्ञान
गुरु अनुभूति में हृदय का प्रेम उडेलकर बनता प्रज्ञावान।

卐 दार्शनिक सोचता ही रहता है
पर यात्रा पर कभी निकला नही
धार्मिक निकलने के लिये वो सोचकर
यात्रा पर बढ चला सही
उसका विवेक पुल बन गया मन बन गया द्वार
और पा लिया उसने अनुपम चेतना का सार। ★

卐 प्रभो मैंने बहुत त्याग किया, भारी किया तप
आठों पहर रट लगाई रामनाम जप
फिर भी मैंने तुमको अब तक पाया ही नही
तभी प्रभो मुस्कराकर बोल उठे,
कैसे आऊँ कहाँ आऊँ प्रभुता को तुमने रमाया ही नही
भरा हुआ अह से पूरा मैं को तुमने मिटाया कही नही।★

卐 जीर्ण शीर्ण यह वस्त्र त्याग, नित्य पहनता है नूतन तन
तन को त्याग आत्मा पाती है,
एक बार फिर नूतन जीवन
जीवन एक अन्नत प्रवाह है एक कर आगे बढता जाता
अनन्त यात्रा के चरण, रुके कब मंजिल पर
वह चढता जाता । ★

卐 किसी ने मुझसे पूछा
मोक्ष क्या है, कैसे उतरे जीवन के पार
तो मैंने एक उडती चिडिया मुठ्ठी में ली पकड
और उसको बताई स्वतन्त्र होने की छटपटाहट और तड़क
पकड छूटते ही शीघ्र उडी अनन्त आकाश
खुली हवा मिलती जहाँ स्वच्छ है प्रकाश
ऐसी छटपटाहट और तडफ हो जाये
हमारी आत्मा अनन्त आकाश में खो जाये
स्वाधीन हुये कि खुला मोक्ष का द्वार । ★

卐 इकलौते बीमार पुत्र की अहर्निश सेवा करते
पिता ने नीद की झपकी मे देखा स्वप्न
बाहर युवा पुत्रो से घिरा हुआ जीवन
कि पुत्र मर गया मचा हाहाकार
आँख खुलते ही पिता का हुआ विचित्र व्यवहार
बारह पुत्रो को पाया और आँख खुलते ही गँवाया
उनसे घिरा था तो इसका ध्यान भी न आया
एक सोते का सपना, एक जागते का सपना
किसका करूँ शोक, मैं किसे कहूँ अपना। ★

卐 गरीब अशिक्षित मल्लाह की नाव मे
बैठ गया एक पडित विद्वान
नाविक को भाषा, गणित, धर्म का था न किंचित ज्ञान
पंडित ने उसके जीवन का बहुलाश व्यर्थ लिया मान
तभी तूफान में नाव डगमगा गई, टूट गई पतवार
तैरना जाने बिना पंडित, डूब गया मँझधार
सब कुछ सीख कर भी जिसे तैरना आता नही
भव सागर का पार वह कभी भी पाता नही।

卐 आँख पर पलकें, दांतो पर अधर
केश खडे सर पर चाम चढा तन पर
मन को घेरते विचार, हृदय को बिंधते भावो के शर
जाति, भाषा रग वर्ण, धर्म सम्प्रदाय के रहे आवरण
आवरणो, मे घिरे, हम नये आवरण गढ रहे हैं
पर जिसने घेरो को तोडा, वे ऊँचे बढ रहे हैं। ★

卐 बिना लक्ष्य के यात्री को गन्तव्य का पता बताया
लडखडाते पैरो को बल देकर उत्साह बढाया
हल्का कर दिया सरका भार
कि यात्री एक ही चरण में पा गया पार
सही दिशा, शक्ति हो वेग और उत्साह
हल्के बन जाय तो पूरी हो सकती प्रभु बनने की चाह।★